सोशल मीडिया अंक

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा प्रकाशित

सेवा ज्योति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

- सोशल मीडिया के उपयोग में विवेक चाहिए
- वास्तविकता से परे फेसबुकी दुनिया
- सेवा भारत का स्वभाव है

वर्ष-11, अंक-2 • अप्रैल-जून 15 • चैत्र-ज्येष्ठ • विक्रमी संवत्-2072

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए दायें से श्री प्रभात जी-प्रभात प्रकाशन, भैयाजी जोशी-सर कार्यवाह रा.स्व.से.सं., महाशय धर्मपाल जी-प्रबन्ध निदेशक एम.डी.एच. मसाले, श्री चन्द्र कुमार सोमानी जी-उद्योगपति मुम्बई, आचार्य बालकृष्ण जी-महामंत्री पतंजलि योगपीठ, श्री आशीष गौतम जी-अध्यक्ष सेवा मिशन, श्री शिव प्रताप शुक्ल जी-पूर्व मंत्री (उ.प्र.),

श्री संजय चतुर्वेदी जी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कुंभ आस्था का प्रतीक' का विमोचन करते हुए, बायें से-श्री संजय जी, श्री आशीष जी, श्री आचार्य बालकृष्ण जी, श्री सतपाल महाराज जी, योग गुरु बाबा रामदेव जी महाराज, भैयाजी जोशी, महाशय धर्मपाल जी, मा. संतोष कुमार गंगवार जी, श्री प्रभात जी, श्री शिवप्रताप शुक्ल जी, श्री चन्द्रप्रकाश सोमानी जी, श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'

DIVYA PREM SEWA MISSION
Sewa Sadhna Sambodhi

सेवा ज्योति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

वर्ष : 11 – अंक : 2
अप्रैल–जून 2015
चैत्र–ज्येष्ठ
विक्रमी संवत् : 2072
मूल्य प्रति : ₹ 15.00

मुख्य सम्पादक
आशीष गौतम

सम्पादक
संजय चतुर्वेदी

प्रबन्धन
आचार्य बालकृष्ण शास्त्री

विज्ञापन प्रभारी
यशवंत सिंह (दिल्ली)
राजेश प्रताप सिंह (पू.उ.प्र.)
पंकज सिंह (मध्य प्रदेश)

आवरण सज्जा
निकुंज

सम्पादकीय कार्यालय
दिव्य प्रेम सेवा मिशन
सेवाकुंज, चण्डीघाट
पो0 कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
पिन कोड – 249408
फोन नं0 – 01334–222211
E-mail : sewa_jyoti@yahoo.com

ड्राफ्ट/चैक 'सेवा ज्योति' हरिद्वार के नाम देय हो।

प्रसार एवं वितरण सम्बन्धी जानकारी हेतु
मो0 9219669691

स्तम्भ	विषय	पृष्ठ सं.
परिसर में आए अतिथियों के उद्गार		4
सम्पादकीय	स्वतंत्र अभिव्यक्ति का खुला मंच–फेसबुक	5
अंक विशेष	सोशल मीडिया के उपयोग में विवेक चाहिए	6
,,	भावी पीढ़ी को सही–गलत का संदेश देना जरूरी	7
,,	सोशल मीडिया नवजागरण का माध्यम	8
,,	सोशल मीडिया की अति पर ध्यान देने की आवश्यकता	9
,,	वास्तविकता से परे फेसबुकी दुनिया	10
,,	सोशल मीडिया के लिए एक बेहतरीन समय	11
व्यक्तित्व	तथ्यों पर खरे उतरने वाले पत्रकार	12
वार्षिक सम्मेलन	सेवा भारत का स्वभाव है	14
,,	पुरुषार्थ किये बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता	16
,,	आशीष जी के सेवा कार्यों में सहयोग करना चाहिए	16
,,	सेवा ही स्थाई कार्य है जो जन्मों तक साथ जायेगी	17
,,	एमडीएच के मालिक जैसा बनने के लिए छह मंत्र	17
,,	सेवा मिशन के कार्यकर्ता अपनी संवेदनाओं का ठंडा न होने दें	18
आयोजन	मैं चारण भारत माता का, माटी का सम्मान लिखूंगा	19
समाचार परिक्रमा	मिशन के स्थापना दिवस पर विरेन्द्र एवं मनोहर को किया सम्मानित	20
,,	ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा ट्रैक सूट वितरण	20
,,	मिशन में आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर	20
,,	जिनका सेवा ही चरित्र होता है वह व्यक्ति शिखर पर पहुँचते हैं	21
,,	सोशल मीडिया पर गोष्ठी का आयोजन	21
,,	मिशन के बच्चों को स्वेटर वितरण	21
परिचय	हमारे कार्यकर्ता – यशवंत सिंह	22
साक्षात्कार	पायलट बनना चाहता हूँ / एक कदम सफलता की ओर....	23
संरक्षण	हमारे सहयोगी–अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2014	24
झलकियाँ	दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम समाचार पत्रों में	25

परिसर में आए अतिथियों के उद्‌गार

धर्म की सारी सीमाएं 'सेवा' पर जाकर समाप्त हो जाती हैं। मिशन का काम देखकर और यहां के नन्हे-मुन्नों को खिलखिलाते देखकर ये पक्का भरोसा हो जाता है कि सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

-**रघुवीर रिछारिया** (गाजियाबाद)

मिशन की सेवा व कार्यपद्धति व असहाय बच्चों को देखकर मैं और मेरी पत्नी अत्यंत प्रभावित हुए। सब मेरी कल्पना से परे था। मिशन के सेवाभाव अत्यंत प्रशसनीय हैं, आप सब लोग धन्यवाद के पात्र हैं।

-**प्रमोद कुमार** (नई दिल्ली)

एक अति सराहनीय और अनुकरणीय प्रयास। इसे देख अच्छे कार्य और समाज सेवा की प्रेरणा मिलती है। आपका त्याग और प्रयास प्रभावी व सराहनीय हों, हमारी कामना है।

-**अवधेश कुमार गंगवार** (लखनऊ)

दिव्य प्रेम सेवा मिशन संस्था में आकर बच्चों को सादर नमस्ते व श्रमदान करते देखकर बहुत अच्छा लगा। बच्चों को जीवन के लिए आत्म-निर्भर बनाना सबसे बड़ा सामाजिक व पुण्य का कार्य है। मैं संस्था के सभी सहयोगियों व पालकों का अभिनन्दन करता हूँ और ईश्वर से उनकी सामर्थ्य बढ़ती रहे, यही प्रार्थना करता हूँ।

-**डॉ0 सत्यपाल सिंह** (बागपत)

दिव्य प्रेम सेवा मिशन में बच्चों की शिक्षा पालन-पोषण देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि असली मानव सेवा, मिशन में हो रही है।

-**रामकिशोर गुप्ता** (एडवोकेट), (इलाहाबाद)

अविश्वसनीय, मैं जिस कल्पना को लेकर श्री कुंज बिहारी जी की प्रेरणा से आयी थी, उससे बहुत अधिक पाया। यहाँ से जो कुछ पाया उससे प्रेरणा लेकर मैं कुछ स्वयं करने की आशा लेकर वापिस जा रही हूँ।

-**डॉ0 भावना सिन्धु** (रूड़की)

संयोगवश बहुत लम्बी अवधि के उपरान्त दिव्य प्रेम सेवा मिशन के परिसर में आने का अवसर प्राप्त हुआ। अविस्मरणीय व मिशन अथक प्रयास का प्रतिफल देख, शब्दों की कमी। इसके कार्यो के बारे में उल्लेख करने के लिये धन्यवाद।

-**डॉ0 प्रभाकर बेबनी**-

यह दिव्य प्रेम सेवा मिशन का शिक्षा और चिकित्सा के साथ-साथ देश प्रेम और भाई-चारे का कार्य सराहनीय है। इस से प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा मिलती है। शुभ कामनाओं के साथ

-**स्वामी सत्यव्रतानन्द** (हरिद्वार)

इसके पूर्व 2004 में आना हुआ, विगत 10 वर्षो में अच्छा एवं नियोजित विकास हुआ। परिणाम भी आने लगे हैं। पूर्ण स्वस्थ छात्रावास प्रकल्प एवं 'मेडिसीनल प्लॉट' की वाटिका भी विकसित हो सकती है। ए,बी की टीम का यह प्रकल्प बने ऐसा प्रयास रहेगा। उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनायें।

-**डॉ0 अशोक कुमार वार्ष्णेय जी** (भोपाल)

संस्थान के सभी कार्य बहुत ही अच्छे वातावरण में हो रहे हैं। विद्यालय का वातावरण स्वच्छ व्यवस्था अच्छी लगी, उनकी प्रशंसा करना सूर्य को ज्योति दिखाना है और हम सभी कार्य करने वालों को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में और भी उन्नति की ओर बढ़ेंगे।

-**नन्द किशोर सेठ जी** (दिल्ली)

कृपया पत्र के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराएं। आप अपनी प्रतिक्रिया sewa_jyoti@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं। अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव इस पते पर भेजें:

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट

पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन कोड-249408

फोन नं. - 01334-222211

सम्पादकीय

स्वतंत्र अभिव्यक्ति का खुला मंच-फेसबुक

फेसबुक समाज में अभिव्यक्ति का एक ऐसा मंच है जहां पर बोलने को लेकर किसी भी व्यक्ति पर कोई भी पाबंदी लगा पाना लगभग असंभव है। कहीं कोई घटना घटी तुरंत उस घटना की तस्वीरें मोबाइल में कैप्चर कर रिपोर्ट बनाकर भेज दी। फेसबुक आज एक हथियार की तरह है इसलिए एक बात का हमेशा ख्याल रखना होगा कि ताकत का हमेशा सदुपयोग नहीं होता दुरुपयोग भी होता है। सोशल मीडिया को जो अभिव्यक्ति दी गई है उस पर अब लगाम लगना जरूरी है। लोगों की कड़ी प्रतिक्रिया इसके विरुद्ध देखने में आती है लेकिन तभी मुझे लगता है कि इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता है । कानून किसी तरीके का प्रतिबंध नहीं होते बल्कि ऐसे नियम होते हैं जिनसे दूसरों की स्वतंत्रता में अतिक्रमण किए बिना अपना कार्य किया जाता है। आजादी उतनी ही अच्छी होती है जिससे कि दूसरे की आजादी में दखल अंदाजी ना हो। आज इस शोध की जरूरत इसलिए भी है कि इस साइबर की दुनिया में कहीं हम ऐसी भूलें करते ही न रहें।

फेसबुक की अपनी ही दुनिया है जिसमें रिश्ते हैं, दोस्ती है, प्यार है और अपनी बात कहने के लिए एक मंच। अपनी खुशी और गम बांटने के लिए हजारों दोस्त फेसबुक की कहानी ठीक आज से 10 साल पहले 2004 में हावर्ड यूनिवर्सिटी के मार्क जुकरवर्ग ने की थी। पहले यह दोस्तों का बैठकखाना हुआ करता था। फिर दौर बदला लोगों का दायरा बढ़ा अपने ही जैसे लोगों से दोस्ती हुई। फेसबुक ने इन 10 सालों में सारी सरहदें मिटा दीं और दुनिया के 40 से ज्यादा देशों में जाल की तरह फैल गया। आज फेसबुक के दुनिया भर में एक अरब से ज्यादा यूजर हो गए हैं। यह साइट अपने अनुभव बांटने के लिए शुरू की थी लेकिन आज ये मल्टीनेशनल कंपनी बन गई है। फेसबुक की सबसे बड़ी ताकत है-"शेयरिंग और लाइकिंग। यानी माउस के एक क्लिक के साथ लिखे-कहे को अपने समूह में बांटना। इस ताकत को पिछले वर्ष हमनें तमिल-अंग्रेजी मिश्रित गीत कोलावरी डी की सफलता के दौरान भी देखा। हां, सिक्के के दूसरे पहलू की तरह सोशल मीडिया की यही कमजोरी भी है, क्योंकि यहां लाइक, शेयर का बटन दबाने से पहले लोग सोचते नहीं। आज के समय में एक दूसरे से जुड़े रहने के लिए सोशल मीडिया का चलन बहुत बढ़ गया है, खासतौर से युवाओं के बीच। लेकिन यही सोशल मीडिया इन युवाओं के लिए कहीं न कहीं खतरा बन कर उभर रहा है। एक मनोचिकित्सक का कहना है कि सोशल मीडिया, युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ाने में योगदान कर रहा है। चेन्नई के आत्महत्या रोकथाम केंद्र स्नेहा की संस्थापक और विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ के आत्महत्या निवारण और अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क की सदस्य लक्ष्मी विजयकुमार ने कहा कि जिंदगी में अच्छे दोस्तों की कमी और ऑनलाइन दोस्तों की अनदेखी, युवाओं में आत्महत्या का कारण बन रही है। फेसबुक समाज में अभिव्यक्ति का एक ऐसा मंच है जहां पर बोलने को लेकर किसी भी व्यक्ति पर कोई भी पाबंदी लगा पाना लगभग असंभव है। कोई भी व्यक्ति जिसके पास किसी भी प्रकार की सूचना है वह उस सूचना को फेसबुक के जरिये दुनिया के सामने उजागर कर सकता है। यह सूचना किसी तथ्यता पर ही आधारित हो यह जरूरी नहीं है। कोई भी व्यक्ति छद्म नाम से किसी को गैरप्रामाणिक सूचना दे सकता है जिससे कि उस सूचना की जवाबदेही व्यक्ति की नहीं रह जाती। कई बार ऐसा देखने में आता है कि कोई व्यक्ति जो फेसबुक पर नहीं भी होता है उसका कोई फर्जी अकाउण्ट फेसबुक पर खोल दिया जाता है और उस अकाउण्ट के जरिये व्यक्ति की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाई जा सकती है साथ ही उस व्यक्ति की व्यावसायिक साख का फायदा अपना कार्य करने में भी उठाया जा सकता है।

फेसबुक आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है, आज इसका दायरा इतना बढ़ा है कि उसे समुद्र की संज्ञा देना गलत नहीं होगा। संचार माध्यमों के विकास के पीछे मुख्य कारण मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना है। वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज में गहरा संबंध एवं निकटता है। इसके द्वारा जन सामान्य की रुचि एवं रिश्तों को स्पष्ट किया जाता है। संचार माध्यमों ने ही सूचना को सर्वसुलभ कराया है। तकनीकी विकास से संचार माध्यम भी विकसित हुए हैं तथा इससे संचार अब ग्लोबल फेनोमेनो बन गया है। तीव्र वैचारिकता के प्रतिफल का नाम है-मीडिया, जो जीवन्त समाज का अभिन्न अंग है। सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है, जो शिक्षण भी कर सकता है और लोक जागृति भी। यह एक ऐसी शक्ति है, जो समाज की कुरीतियों एवं विकारों को उजागर करके उन्हें दूर करने का प्रयास कर सकती है और सुधारों को सामने लाकर उन्हें विकसित करने का प्रयास कर सकती है। भारत में अभी लोगों को फेसबुक मीडिया की ताकत का पता लगा है। भारत की जनता, जिसकी अभिव्यक्ति पर वर्षो से लगाम कसी गई हो, चाहे वो मुगलों का शासन हो चाहे अंग्रेजों का शासन जिसमें सेंसरशिप को व्यापक तरीके से भारतीयों के ऊपर लादा गया। अभिव्यक्ति का नया-नया माध्यम होने के कारण अभी भी लोगों को नहीं पता है कि किन सावधानियों को फेसबुक मीडिया का प्रयोग करने में ध्यान रखना चाहिए। साइबर अपराधों के बढ़ने के कारण साइबर क्षेत्र में भी बहुत से कानूनों का निर्माण तो हो गया है लेकिन लोगों में इसके लिए जागरूकता की कमी है। फेसबुक एक हथियार की तरह है यदि यह हथियार गलत हाथों में चला गया तो बेशक तबाही कर सकता है, लेकिन यदि सही हाथों में गया तो देश की सुरक्षा के काम आ सकता है।

संजय चतुर्वेदी

अंक विशेष

सोशल मीडिया के उपयोग में विवेक चाहिए

-शिव प्रकाश जी (राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री-भाजपा)

किसी ने कहा है कि आज का युग इनफॉरमेशन का युग है सैय्यद शहाबुद्दीन ने अपनी पत्रिका में उल्लेख किया था कि आने वाला समय इनफॉरमेशन वॉर (युद्ध) होगा। सूचना का युद्ध होगा और जिसके पास जितनी अधिक सूचनाएँ होंगी वह इस युद्ध के अन्दर जीत जायेगा। प्राचीन काल से ही देशों के अन्दर जो युद्ध हुए, स्वतन्त्रता के युद्ध हुए, ऐसे सबके बीच में मीडिया का बहुत अहम रोल रहा है। अपने देश की स्वतंत्रता का युद्ध देखेंगे तो गांधी जी हरिजन नाम की पत्रिका निकालते थे, डॉ. भीमराव अम्बेडकर मूकनायक और बहिष्कृत नाम से पेपर निकालते थे। लोकमान्य तिलक केसरी नाम से निकालते थे। उस समय इस देश के अन्दर स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों को स्थापित करने के लिए यह जो संवाद माध्यम है तो इसका उपयोग हुआ है। हम सबको यह भी ज्ञात है इस स्वतंत्रता आन्दोलन के समय पत्र-पत्रिकाएं भी निकाली गयीं। समाचार पत्र के संपादन का जो कार्य करते थे उनको अंग्रेज सरकार पकड़ लेती थी। उस समय समाचार पत्र में एक विज्ञापन निकलता था उसमें लिखा होता था कि हमको एक संपादक चाहिए, वेतन के रूप में तीन सूखी रोटी मिलेंगी और रहने के लिए जेलखाना मिलेगा। जो आ सकते हैं आइए और ऐसे समय में लोगों ने आकर समाज व देश के अन्दर परिवर्तन लाने में भूमिका अदा की। लेकिन प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रानिक मीडिया में प्रवेश कर गया सोशल मीडिया, फेसबुक से लेकर लगभग दस प्रकार की चीजें आज दुनियां के अन्दर संचालित हैं। ध्यान में क्या आता है कि जिस समाज के अन्दर 50 वर्ष के नीचे जितने व्यक्ति हैं उनको बोला जा रहा है युवा। तो इस प्रकार से दुनिया के अन्दर हम सर्वाधिक युवा देश हैं। अलग-अलग हिसाब से लोग आंकड़े निकालते हैं कोई कहता है 70 प्रतिशत कोई कहता है 85 करोड़ युवाओं वाला यह भारत देश है। लेकिन दुनिया के अन्दर चीन के साथ-साथ एक बड़ी ताकत यह हमारे भारत की ताकत है, जो युवा ताकत है। दुनिया के देशों के अन्दर आर्थिक साधनों का प्रसार होगा, दूसरे देशों के अन्दर दूसरे प्रकार के संसाधन होंगे। लेकिन हमारे पास यदि कोई ताकत है तो वह युवा भारत के नाते 70-75 प्रतिशत युवा वाला देश है। युवा ही सोशल मीडिया का उपयोग करने वाला वर्ग है। प्रिन्ट मीडिया का अपना महत्व है, लेकिन सूचनाओं के लिए हम उस पर अवलम्बित नहीं हैं वह धीरे-धीरे आउट हो रहा है लेकिन अब 24 घंटे हमारे हाथ में दुनिया के समाचार हैं, वह सोशल मीडिया के कारण हैं। आज समाचार पत्र और टेलीविजन को भी समाचार लेने के लिए इनका उपयोग करना पड़ रहा है। क्योंकि यह अधिक त्वरित गति के हैं इस कारण से इसका प्रचलन अधिक बढ़ गया। साधन तो हमारे हाथ में है लेकिन उपयोग कैसे करना है इसका विवेक चाहिए, आज बिजनेस के लिए भी मीडिया का उपयोग हो रहा है, लेकिन इसी के साथ-साथ वास्तव में साधन कैसा है-

विद्या विवादाय, धनमदाय, शक्ति परेषाम् च, परपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।।

व्यक्ति दो प्रकार का होता है व्यक्ति संस्कारी है और व्यक्ति कुसंस्कारी है। यदि व्यक्ति कुसंस्कारी है तो उसके हाथ में विद्या आ गयी तो वह विवाद पैदा करता है विवेक का उपयोग नहीं करता, अपने हित के लिए उपयोग करता है, अहंकार के लिए उपयोग करता है। इसलिए संत-महात्मा कहते हैं कि रावण भी बहुत ज्ञानी था उसने भी ग्रन्थों की रचना की थी लेकिन संस्कार नहीं था। जो कुसंस्कारी है उसकी विद्या विवाद के लिए, दूसरों को सताने के लिए और धन अहंकार के लिए काम आता है। लेकिन एक संस्कारी व्यक्ति है तो उसकी विद्या ज्ञान के काम आती है उसका धन दान के काम आता है और उसकी शक्ति दूसरों के रक्षण के काम आती है। ताकत हनुमान जी की भी है वे अतुलित बलधाम हैं और ताकत रावण की भी है। एक स्त्री का हरण करता है दूसरा स्त्री के संरक्षण के लिए जीवन न्यौछावर करता है। ताकत दोनों के अन्दर है इसी प्रकार से आज क्या हो गया है सोशल मीडिया हमारे हाथ का मोबाइल, कम्प्यूटर उस पर चलने वाली हमारी उंगलियां हमें गड्ढे में भी ले जा सकती हैं और उससे समाज का परिवर्तन भी हो सकता है। करना कैसे है यह व्यक्ति के संस्कार के ऊपर निर्भर है। जो बात आपको मालूम है और अपने अलावा अगर दूसरे को बताई है तो वह समझ लो कि दुनिया को मालूम है क्योंकि सोशल मीडिया सबकी दृष्टि में है। उससे देखते हैं, कि आप क्या कर रहे हैं इस कारण से इसका उपयोग कैसा करना इसलिए आज के समय समाज में अनेक प्रकार के प्रश्न हैं। अपने देश के अन्दर देखेंगे कि गरीबी है अनेक प्रकार की कुरीतियां हैं, अनकों दोष हैं, इन दोषों का वर्णन करके, महिमामण्डित करके समाज में आलोचना का वातावरण भी बना सकते हैं और इन दोषों की तह में जाकर उसके पीछे की मानसिकता ठीक वर्णन करके उन दोषों के परिष्कार में भी सहयोग कर सकते हैं। कभी-कभी हमारा मीडिया बातों को प्रस्तुत करता है,

प्रस्तुतीकरण से सही दिशा जा रही है या गलत दिशा जा रही है। सोशल मीडिया पर फेक समाचार भी हैं, दिखाने वाले की मानसिकता कैसी है, सही बातों को किस सन्दर्भ में लाना, आज समाज को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं, इसका विवेक रखते हुए यदि हमने सारे यंत्रों का उपयोग किया तो ये समाज परिवर्तन में सहायक हो जायेंगे। पिछले दिनों भ्रष्टाचार को लेकर सोशल मीडिया ने इतना महत्वपूर्ण रोल अपनाया जिसका परिणाम यह हुआ कि देश के अन्दर एक परिवर्तन की दिशा हो गयी। समाचार पत्र इस दिशा में काम करते हैं लेकिन समाचार पत्रों को चलाने के लिए कभी-कभी विज्ञापनों पर अवलम्बित रहना पड़ता है। जब विज्ञापन पर अवलम्बित रहते हैं तो विज्ञापन प्राप्त करने के लिए जी हजूरी करनी पड़ती है तो सत्य को बोलने से बचने का काम हो जाता है। इच्छा भले न होगी लेकिन धन्धे को चलाने की मजबूरी होगी। लेकिन सोशल मीडिया में ऐसा नहीं है। सीरिया और लीबिया में सत्ता परिवर्तन सोशल मीडिया के अभियान से हुआ। अपने देश में भी 2014 के चुनाव में सोशल मीडिया का अहम रोल रहा। लेकिन रोल अदा करने वाली सर्वाधिक युवा पीढ़ी के अन्दर विवेक जागृत करना कि क्या गलत क्या सही है जानना जरूरी है। हम समाज में सही दृष्टि रखकर ही सामाजिक, राजनीतिक मार्गदर्शन कर सकेंगे। हम साधन का उपयोग तो करेंगे, लेकिन विवेकपूर्ण नहीं करेंगे तो दुरुपयोग होगा। सोशल मीडिया के माध्यम से हम भारत के विचार को ठीक से दुनिया के सामने ले जायें। हमें विपरीत विचारों के प्रति भी अपने विचार प्रस्तुत करने का विवेक चाहिए। हमारे अनेक महापुरुष हैं किसी की कोई त्रुटि भी हो सकती है, तो उस त्रुटि को प्रचार करके भी अनास्था पैदा करते हैं। जिन बातों का उल्लेख नहीं करना चाहिए उनका भी उल्लेख हो जाता है। सत्य है पर ऐसे सत्य से भी क्या होने वाला है। भावी पीढ़ी अपने महापुरूषों के प्रति विश्वास, सकारात्मकता, समानताओं संघर्षों से जूझने की सामर्थ्य लेकर खड़ी हो और सोशल मीडिया का इसमें रोल हो तो हम ठीक दिशा में उपयोग करेंगे, यदि हमने विचार नहीं किया तो इसके उपयोग में दुरूपयोग होने का डर रहेगा। सोशल मीडिया का बहुत बड़ा वर्ग है आँकड़ों के अनुसार हो सकता है कि आने वाले दिनों में सौ प्रतिशत लोग इसका उपयोग करें इसलिए इसका महत्व अधिक होगा। लेकिन महत्व होने के बाद इसके पीछे की जो दृष्टि हमारी सही, नहीं होगी तो उसके साथ दोष भी पनपेंगे, जो आज पनप भी रहे हैं उनका आभास आप सबको भी है। अपनी आने वाली पीढ़ी को सही सकारात्मक संदेश देते हुए, अच्छे काम, अच्छी योजनाएं, अच्छा विचार, अच्छे प्रयोग सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में लाते हुए, विश्वास बनाने का काम यदि हमने किया तो मुझे लगता है कि परिणामकारी हो सकता है।

(सोशल मीडिया पर आयोजित गोष्ठी 'भारत नीति संवाद' में व्यक्त विचार)

भावी पीढ़ी को सही-गलत का संदेश देना जरूरी

-आचार्य बालकृष्ण जी (महामंत्री-पतंजलि योगपीठ)

जब बात होती है हमारी भारतीय संस्कृति की तो हम कहते हैं कि अपसंस्कृति ने स्थान ले लिया है। तब हम नकारात्मकता से प्रारम्भ होते हैं, पर उस अपसंस्कृति के निराकरण के लिए हमारा पुरुषार्थ, हमारी सहभागिता कितनी रही इस पर हम थोड़ा सा विचार करें तो हमारी संस्कृति के जो उदात्त पक्ष, इसकी महानता, वैज्ञानिकता पूरी दुनिया के अन्दर हम पहुँचा सकते हैं। इसके लिए सबसे सरल साधन सोशल मीडिया है। फेसबुक पर छोटी-छोटी बातें भी लाखों लोग देखते हैं। जिन बातों को आप जीवन में देखना चाहते हैं, दूसरों से चाहते हैं कि लोग इस तरह का व्यवहार करें, आचरण करें, राजनैतिक परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन के लिए ऐसा करना चाहिए, सोशल मीडिया के माध्यम से आप पूरे देश को सुना सकते हैं। सोशल मीडिया की ताकत हमको समझनी चाहिए और हम सबको प्रयोग भी करनी चाहिए। इससे अभी हाल में सामाजिक परिवर्तन भी आया है। हमारे प्रधानमंत्री भी सोशल मीडिया की ताकत महसूस करते हैं और जान रहे हैं कि पूरी दुनिया के अन्दर अपनी बात पहुँचाने के लिए सोशल मीडिया की अहम भूमिका है। समाज की गति के अनुसार हमारी जानकारी तो रहनी चाहिए। परन्तु और कार्यों को न भुला दें। जीवन में उन्नति के लिए, अच्छाई के लिए ज्ञान का, टैक्नोलॉजी का, विज्ञान का उपयोग करना चाहिए लेकिन यह हमारी बीमारी, मुसीबत न बने इसका ध्यान रखना चाहिए। इसके बारे में बच्चों एवं भावी पीढ़ी को सही, गलत का सन्देश देना जरूरी है। आने वाले समय में हो सकता है कि बीमारियां सोशल मीडिया की देन हों इसलिए सावधान रहना चाहिए। संसाधनों का उपयोग जीवन को आगे बढ़ाने के लिए, संस्कृति की रक्षा के लिए और अपनी उदात्त चीजों को दुनियां में पहुंचाने के लिए करें, अनावश्यक समय का इसमें दुरुपयोग न करें। अपने जीवन को, आचरण को, व्यवहार को अच्छा रखते हुए इन सबका प्रयोग करें तो हम स्वयं को, परिवार को, देश को खुशहाल रख सकेंगे और समाज का बहुत उपकार कर सकेंगे।

(सोशल मीडिया पर आयोजित गोष्ठी 'भारत नीति संवाद' में व्यक्त विचार)

अंक विशेष

सोशल मीडिया नवजागरण का माध्यम

- मुरलीधर राव जी (राष्ट्रीय महासचिव-भाजपा)

राजतंत्र में भ्रष्टाचार का सफाया करने में सोशल मीडिया अहम भूमिका निभा सकती है। लोगों को सशक्त करने में एक मजबूत हथियार के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। सोशल मीडिया का भ्रष्टाचार पूरी तरह से चाहे न मिट पाये लेकिन राजतंत्र में इसके होने की बात पुरानी जरूर लगने लगेगी। सोशल मीडिया एक तरफ जहां कठोर चुनौती की तरह है वहीं सरकार के लिए एक बेहतरीन मौका भी है। क्योंकि अगले पांच दस सालों के लिए देश की जनसंख्या के लिए शासन अपेक्षा का एक अहम मुद्दा रहेगा।

सोशल मीडिया के विभिन्न उपकरणों ने पहली बार आम आदमी को सशक्त बनाया है, जो अब अपने आस-पास घट रही बातों पर अपना मत रख सकता है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि देश के नौजवानों की बढ़ती ताकत और तकनीक की ओर उनका रुझान देश को उज्ज्वल भविष्य की ओर लेकर जायेंगे। पहले अखबार के रिपोर्टर की दया पर निर्भर था कि समाचार कौन सा छपेगा और कितना छपेगा। लेकिन आज मीडिया की ताकत बढ़ रही है। आने वाले समय में सिटीजन जर्नलिज्म शुरू होगा। और सोशल मीडिया का हथियार के रूप में प्रयोग होगा। सोशल मीडिया नव जागरण का भी माध्यम है। इसने प्रिन्ट मीडिया के एकाधिकार को तोड़ा है। पहले अखबार बड़ा उपयोगी होता था। हमें कुछ बताना होता था, तो उसके लिए प्रेस, मीडिया वालों को मानते थे कि यह हमारा सहारा है। आज उसका एकाधिकार समाप्त होने जा रहा है, सोशल मीडिया की ताकत बढ़ी है, इसके रिपोर्टरों की संख्या मिलियन्स में है। इससे प्रशासन में सतर्कता, पारदर्शिता, दुरुस्तता बढ़ेगी। सोशल मीडिया के आने पर सरकार को अपनी सतर्कता बढ़ानी पड़ेगी। इसलिए देश के अन्दर राज्य सरकारों से लेकर केन्द्र सरकार तक अपने दैनन्दिन काम-काज में गतिशीलता बढ़ानी पड़ेगी। आने वाले दिनों में एक नया आन्दोलन शुरू होगा। जिसका नाम होगा सिटीजन जर्नलिज्म। इसके प्रशिक्षण शिविर लगाये जायेंगे कि सोशल मीडिया का उपयोग कैसे करना है। इस देश में आने वाले 5 से 8 वर्षों के अन्दर लोकतंत्र के सुधार, चुनाव में सुधार, सरकार में पारदर्शिता, गतिशीलता और सरकार के माध्यम से सुशासन। इन सारे विषयों पर भारत की जनता एवं युवा अब चुप बैठने वाले नहीं हैं।

सोशल मीडिया का हथियार उपयोग करते हुए परिवर्तन की लड़ाई में आगे बढ़ेगा। राजनीतिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र में काम करने वालों को अपनी छवि में सुधार करना पड़ेगा। इसलिए आने वाले दिनों में अपने देश के अन्दर जो अभी आपने परिवर्तन देखे 1947 के बाद देश में सबसे बड़ा आन्दोलन भ्रष्टाचार पर दिल्ली में हुआ। यह सम्भवत: भी हुआ कि इसमें टैक्नोलॉजी ने साथ दिया। आने वाले समय में राजनीति या भ्रष्टाचार की बात नहीं क्षेत्रीय संस्कृति प्रचार का भी माध्यम सोशल मीडिया बनेगा। संगीत में हमारी सम्पत्ति, मनोरंजन में हमारी सम्पत्ति, व्यंजनों में हमारी सम्पत्ति, जड़ी-बूटियों में हमारी सम्पत्ति, जीव-जन्तुओं में हमारी सम्पत्ति ये सारी अखबारों और वीडियो की लिमिटेशन्स है। सोशल मीडिया की स्पेस लिमिटेशन्स नहीं हैं। इस कारण से सोशल मीडिया इस देश की पहचान, अस्तित्व, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, ज्ञान, कलायें सबको विश्वमंच पर प्रस्तुत करने में सहायक बनेगा। सोशल मीडिया से डरिये मत, आगे बढ़िए। देश की सात्विक क्षमता बहुत है। अनुशासन भी रखेंगे और नियंत्रण में भी लायेंगे। इस देश में विदेशी विचारों पर चलने वाली राजनीति का अन्त आ गया है क्योंकि अब हर आदमी के पास औजार है। अब देश के लिए हर जवान लड़ने वाला है। स्वच्छ भारत अभियान आज जन अभियान बनता जा रहा है इसका कारण है सोशल मीडिया। आने वाले समय में सोशल मीडिया अपने देश के नवजागरण हेतु बहुत बड़ा माध्यम होगा। इसकी ऊर्जा देश के युवाओं के माध्यम से पैदा हो रही है। 18 से 24 वर्ष के युवाओं की संख्या सोशल मीडिया में अधिक है। स्वच्छ भारत अभियान, गंगा निर्मलता-अविरलता व स्वच्छता का अभियान सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए निश्चित ही आगे बढ़ सकता है। सोशल मीडिया देश की सशक्तिकरण का बहुत बड़ा माध्यम है।

(सोशल मीडिया पर आयोजित गोष्ठी 'भारत नीति संवाद' में व्यक्त विचार)

अंक विशेष सोशल मीडिया की अति पर ध्यान देने की आवश्यकता

– आशीष गौतम जी (अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन)

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि मैं सोशल मीडिया का महत्व 10 वर्ष पहले ही समझ गया था। इसके महत्व को हम नकार नहीं सकते। आवश्यकता भी है और अनिवार्यता भी है। इस संसार में जितनी भी प्रकार की चीजें हैं, शरीर की जरूरत के अनुसार लेंगे तो शरीर बलिष्ठ होगा, देश के काम आयेगा। जरूरत से अधिक लेंगे तो दुष्परिणाम आयेगा। अति हर चीज की खराब है। किसी भी चीज की गुणवत्ता समझकर उपयोग करना समझदारी है। यही बात सोशल मीडिया के बारे में है। सोशल मीडिया की अति पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में हम मोबाईल, कम्प्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट का उपयोग करते हैं। उपयोगिता है, जरूरत है, इन्टरनेट इन सबको चलाने के लिए आवश्यक हो गया है। इससे ईमेल, एसएमएस, एमएमएस एवं बेवपेज का उपयोग कर रहे हैं। हम लोग ब्लाग में आ गये, ट्यूटर में चले गये, फेसबुक के क्षेत्र में आ गये। दुनियां की आबादी लगभग 700 करोड़ है इसमें से 100 करोड़ से ऊपर ऐसे लोग हैं जो फेसबुक का उपयोग कर रहे हैं। ये संख्या हर साल 30 प्रतिशत बढ़ रही है। अगर दस वर्ष में शत प्रतिशत भी पहुंच जाय तो आश्चर्य मत मानना। इसी प्रकार ट्विटर का क्षेत्र है 50 करोड़ से ज्यादा लोग दुनिया में इसका उपयोग करते हैं। आज प्रतिदिन 24 घंटे में 40-45 करोड़ ट्विट हो रहा है। ऐसी इस क्षेत्र में रोज नई-नई चीजें आती जा रही हैं। वाट्सप देखते हैं नये-नये आयाम सोशल मीडिया के क्षेत्र में हो रहे हैं। तो इसकी उपयोगिता भी जानने की जरूरत है।

1 साल 2 साल में सब कुछ बदलता जायेगा। लेकिन 2-3 बातों को ध्यान में रखने की जरूरत है। प्रथम ऐसे क्षेत्र में केवल प्रेरक सामग्री ही भेजी जाय जो देश को, समाज को, नौजवान को नई दिशा दे सकती है। लेकिन सामग्री प्रामाणिक होनी चाहिए। फर्जी बातों से हम सबको दूर रहना चाहिए। हम सबके निजी विचार होते हैं, सम्बन्ध होते हैं, ऐसे निजी सम्बन्धों को, निजी फोटोग्राफ्स को, निजी विचार को निजी व्यक्ति तक ही पहुँचाइये तो उसकी उपयोगिता है। हर जगह फैलाने की आवश्यकता है क्या ?इसी प्रकार से कौन सी बात समाज में अफवाह फैला सकती है, कौन सी बात समाज को योग्य दिशा दे सकती है चयन करना पड़ेगा।

हमको कोई चीज उपयोग करनी है तो करिये अच्छी बात है लेकिन कितना करना, कब करना, किससे करना इस बात की समझ इस युग में बहुत जरूरी है। इसका ध्यान नहीं रहा तो आपस के कनफ्यूजन होंगे, सम्बन्ध टूटेंगे, गलत बातें भेजी जायेंगी। नौजवान उपयोग करते हैं, बच्चे भी उपयोग करने लगे हैं, तो उनके मन में गलत सूचनाओं के पाप का भागी कौन बनेगा ?ऐसी कोई भी सूचना जो देश को, परिवार को, समाज को, भारत की संस्कृति को क्षति पहुंचाती है, नुकसान पहंचाती है, ऐसा कोई भी काम हमें क्षणिक मनोरंजन के लिए मजाक में नहीं करना चाहिए क्योंकि आज आप के हाथ में बहुत बड़ी ताकत आ गयी है। आज कोई भी विचार, चित्र, दो मिनट में पूरे ब्रह्माण्ड में छा जाता है। जो शब्द बोला जाता है वह ब्रह्माण्ड के रहने तक व्याप्त रहेगा। हमको तय करना है कि सोशल मीडिया के माध्यम से सकारात्मक बातें भेजनी है या गाली गलौज भेजना है। हमें ब्रह्माण्ड को कौन सी बातों से आच्छादित करना है। इस बात को हमें तय करना पड़ेगा। सोशल मीडिया की आज ताकत दुनिया भर में देखी गयी है, समझी गयी है।

(सोशल मीडिया पर आयोजित गोष्ठी 'भारत नीति संवाद' में व्यक्त विचार)

अंक विशेष

वास्तविकता से परे फेसबुकी दुनिया

-डॉ. कृष्णा झरे

फेसबुक ने आभासी और वास्तविक दुनिया के बीच की दूरी को मिटा सा दिया है। आभासी दुनिया कुछ पल के लिए वास्तविक लगती है परन्तु सच्चाई में वह कुछ होती ही नहीं। फेसबुक पर जन्मा संसार भी (वर्चुअल वर्ल्ड) भी आभास मात्र है, वास्तविक नहीं। आजकल विश्व में आबादी के आँकडों में दूसरे पायदान पर खड़ी भारत की जनसंख्या का आभासी दुनिया में तेजी से बढ़त हासिल करना चर्चा में है। ई-युग ने जिस तरह से भारत में शिक्षित-अशिक्षित का भेदभाव खतम कर हर हाथ में फेसबुक पहुँचाने की मुहिम चलाई है, इससे संभावनाओं के अनेक द्वार खुले हैं। फेसबुक वह स्थान है, जहाँ अपनी भावनाओं को खुलकर अभिव्यक्त किया जाता है। फिर चाहे वह प्रेम हो, गुस्सा हो, आक्रोश या भड़ास। आँकडों के आइने में देखें तो फेसबुक दुनिया की सबसे बड़ी सोशल नेटवर्किंग साइट है। हॉर्वर्ड विश्वविद्यालय के छात्र मार्क जुकरबर्ग ने 4 फरवरी, 2004 को फेसबुक की शुरूआत की। तब से अब तक वक्त के साथ कई आयाम फेसबुक में जुड़े। इनमें सबसे प्रमुख माना गया 2004 में शामिल हुई फोटो अपलोड करने की सुविधा को क्योंकि इसके माध्यम से अभिव्यक्ति अधिक जीवंत बनी और लोगों में, खासकर युवा वर्ग में इसके प्रति आकर्षण और तीव्र हुआ।

फेसबुक के कुल 1.32 बिलियन उपभोक्ताओं में 100 मिलियन भारतीय उपभोक्ता हैं। 39.9 मिलियन से अधिक उपभोक्ता मोबाइल से लॉग-इन करते हैं। फेसबुक के सीइओ मार्क जुकरबर्ग के अनुसार-उनके उपभोक्ता 24 घंटों में औसतन 40 मिनट फेसबुक पर बिताते हैं। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के थिंक टैंक कहे जाने वाले विलियम इन्स्टीट्यूट के अनुसार-आभासी दुनिया को सच मान लेने से और इसकी प्रशंसा को यथार्थ मान लेने से हम यथार्थ रूप से पंगु बन जाते हैं और इससे बहुत दूर चले जाते हैं। जो फेसबुक जिंदगी में शामिल हुई थी, वो कब जिंदगी बनने लगती है, पता ही नहीं चलता। फेसबुक की जिंदगी होती ही है-आभासी। आभासी अर्थात् जिसे कल्पना में किया जा सके, वास्तविकता में नहीं। कल्पना तो कुछ भी कर सकते हैं परन्तु कल्पना का संसार हमारी जिन्दगी की सच्चाई का सामना नहीं कर सकता। वास्तविकता के समक्ष काल्पनिक दुनिया एक क्षण में ढह जाती है। जैसे फेसबुक पर बनाये गये मित्र के साथ हम अपनी भावनाओं को साझा नहीं कर सकते। कठिनाइयों के समय में वह कल्पना से बाहर निकलकर हमारी सहायता नहीं कर सकता और न हम उससे सहायता की अपेक्षा ही कर सकते हैं। परंतु विडंबना यह है कि अधिकांश लोग फेसबुक मित्र को ही यथार्थ मान बैठने की भयंकर भूल करते हैं। फेसबुक के इस नवीन एवं आधुनिक संसार में वास्तविक जीवन और आभासी चेहरा लगभग एक हो गए हैं। यहाँ यह नहीं पता चल पाता कि वास्तविक जीवन कहाँ खतम होता है और हमारी फेसबुक जिंदगी कहाँ शुरू होती है।

फेसबुक से जितना लाभ मिलता है, उससे कहीं ज्यादा हानि एवं नुकसान उठाना पड़ता है। इसमें समय की घोर बरबादी होती है। जो समय एक पत्नी अपने घर एवं पति के लिए दे सकती थी, वह फेसबुक में बिताना पसंद करती है। एक आँकडा तो और भी हैरान करता है कि आज की आधुनिक माताएँ अपने बच्चों से अधिक फेसबुक के साथ समय बिताना पसंद करने लगी हैं। व्यक्ति अपने कार्य एवं जिम्मेदारी के बीच भी फेसबुक पर समय व्यतीत करने से नहीं चूकता। परिवार, बच्चों के लिए समय भले ही न हो पर फेसबुक के लिए समय अवश्य निकल आता है। फेसबुक के प्रशंसकों का बेतरतीब मायाजाल बिखरा पड़ा है। हर चीज पर प्रशंसा करना, प्रशंसा पाना एक अजीब-सी मानसिकता को पैदा करता है, जो लंबे समय तक बनी रहे तो एक मनोरोग को जन्म देती है। इस मनोरोग का नाम है-अटेन्शन सीकिंग। फेसबुक के द्वारा प्राप्त यह मनोरोग हमें हमेशा अपनी प्रशंसा पाने की चाह हेतु कार्य करने के लिए विवश करता है। ऐसा कोई काम, जिससे दूसरे हमारी ओर आकर्षित हों और उसे झूठा ही सही, पर सराहें ऐसा कोई कार्य करने के लिए विवश करता है। इससे व्यक्तित्व में एक गहरी खाई पैदा हो जाती है। यह सब घटनाएँ फेसबुक का ही परिणाम हैं या कहें दुष्परिणाम है।

फेसबुक किसी जानकारी प्राप्त करने, किसी खास विषय के प्रचार-प्रसार, ज्ञानवर्द्धन एवं शोध के लिए हो तो ठीक है। इसके स्थान पर फेसबुक का उपयोग अपराध एवं व्यर्थ बकवास के लिए किया जाए, तो यह हमें एक ऐसी काल्पनिक एवं आभासी दुनिया में ले जाती है, जहाँ से निकलना अत्यंत कठिन होता है और इससे अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक समस्याएँ खड़ी होती हैं। फेसबुक की आदत हो जाने पर यदि किसी कारण से किसी वक्त फेसबुक कुछ समय के लिए लॉग-आन करने को नहीं मिले तो व्यक्ति भीतर से उद्विग्न, बेचैन और चिड़चिड़ा हो जाता है। फेसबुक की यह सच्चाई इससे जुड़े सभी लोगों के लिए आत्मसमीक्षा की अपील करती है। कहीं हम या हमारे अपने फेसबुक की आभासी दुनियाँ में फँसकर अपने स्वयं के जीवन और इससे जुड़े प्यार-स्नेहपूर्ण सम्बन्धों को खोने तो नहीं जा रहे हैं। इस आभासी दुनिया में कदम रखने से पूर्व अपने विवेक का टार्च (प्रकाश) अवश्य प्रदीप्त कर लेना चाहिए।

(लेखक देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के जीवन प्रबन्धन विभाग में समन्वयक हैं)

अंक विशेष

सोशल मीडिया के लिए एक बेहतरीन समय

-कैटी स्टैन्टन

मैं न तो कोई पहली, और न ही अंतिम शख्स हूँ, जो यह कहे कि भारत मिली-जुली संस्कृति वाला देश है। भारत को समझना इसलिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि यहाँ 1.2 अरब लोग बसते हैं और सभी के साथ जटिलताएं जुड़ी हैं। चीन या रूस जैसे बड़े देशों के विपरीत यहाँ कई भाषाएँ हैं, साथ ही सभी राज्यों की अपनी अलग-अलग संस्कृतियां हैं। इससे आप मेरी परेशानी का सहज अंदाजा लगा सकते हैं, क्योंकि मैं 4,400 किलोमीटर दूर एक ऐसे देश से आई हूँ, जहाँ सिर्फ एक ही भाषा है। यह सच है कि इंटरनेट और मोबाइल फोन उपभोक्ताओं के संदर्भ में मेरे देश, अमेरिका को भारत पछाड़ रहा है। उम्मीद है कि इस वर्ष के अंत तक यहां 30 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता हो जाएंगे। यानी अमेरिका के हर पुरूष, महिला और बच्चे पर एक भारतीय इंटरनेट उपभोक्ता। इसके साथ ही अभी यहां 60 करोड़ लोग मोबाइल फोन इस्तेमाल करते हैं, यानी अमेरिका की आबादी का दोगुना। भारतीय हमेशा नई तकनीक को अपनाने में आगे रहते हैं, फिर वह इंटरनेट हो, मोबाइल या अब सोशल मीडिया।

ऐसे वक्त में, जब विश्व की सर्वाधिक युवा आबादी भारत में बसती है और मोबाइल फोन की सहायता से इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ रही है, कारोबारी और उपयोगकर्ता, दोनों के लिहाज से सोशल मीडिया के लिए एक बेहतरीन समय है। जहाँ तक ट्विटर की बात है, भारतीयों के लिए इस मंच पर आने का इससे बेहतर समय हो ही नहीं सकता। आखिरकार ज्यादा से ज्यादा लोग अब यह समझने लगे हैं कि सोशल मीडिया महज दोस्तों से जुड़ने का साधन मात्र ही नहीं है। आज भारत सरकार सोशल मीडिया की सहायता से ही अमेरिका के करीब आ रही है, और इसी माध्यम से लोगों को प्रियंका चोपड़ा की नई फिल्म और उसके प्रेरणास्त्रोत की जानकारी मिल रही है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गई टीम इंडिया की तैयारी की खबरें भी इसी माध्यम से मिल रही हैं। इतना ही नहीं, ट्विटर हमें उनसे बात करने का मौका भी दे रहा है।

ट्विटर कितना प्रभावित कर सकता है, इसका सर्वोत्तम उदाहरण नरेन्द्र मोदी हैं। उन्हें ऐसे चुनाव में अभूतपूर्व जनादेश मिला, जिसे 'ट्विटर इलेक्शन' भी कहा जाता है। ट्विटर पर उनके फॉलोअरों की संख्या 80 लाख को पार कर गई है। मगर सबसे आकर्षक है, उनकी नई शैली। हर मंत्रालय को सोशल मीडिया से जोड़ने का उनका सपना ही है कि आज करीब 40 मंत्री ट्विटर के जरिये लोगों से जुड़े हुए हैं। यह विचार न सिर्फ सरकार को जमीन पर उतार रहा है, बल्कि सभी नागरिकों को अपने मंत्रालयों से जुड़ने और समस्या के निराकरण का मंच भी मुहैया करा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी 'ट्विटर डिप्लोमेसी'के जरिये भी इसे नई ऊँचाइयों पर ले गए हैं। जापान के प्रधानमंत्री शिंजोअबे और ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष टोनी एबॉट के साथ उनकी ऑनलाइन बातें दोनों देशों के बीच नई दोस्ती का स्पष्ट संकेत है।

ऐसे देश में, जो कई सारी छोटी-बड़ी समस्याओं से जूझता है, ट्विटर जागरूकता फैलाने के साथ ही विकास का भी बड़ा वाहक है। जैसे सत्यमेव जयते की यात्रा को ही देखें। इस कार्यक्रम में उठाए गए मुद्दे सोशल मीडिया पर गंभीर बहसों का हिस्सा बने। स्थिति यह रही कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष ट्विटर पर 300 प्रतिशत ज्यादा ट्वीट इससे संबंधित हुए। इतना ही नहीं, शो देखने के दौरान किए जाने वाले ट्वीट आपको दूसरे लोगों के करीब भी लाते हैं। यानी यह ऐसा मंच है, जहां हर कोई आपकी बातचीत का हिस्सा बन सकता है।

यह भी एक बड़ी वजह है कि आखिर क्यों हम भारतीय क्रिकेट टीम के लाखों प्रशंसकों का अनुभव बढ़ाने के लिए ट्विटर का इस्तेमाल करना चाहते हैं। सोशल मीडिया को महज क्रिकेट और बॉलीवुड तक ही नहीं समेटा जा सकता। मेरे लिए यह भारत के आत्मविश्वास की आत्म अभिव्यक्ति है। यह नई दुनिया खोजने मे आपकी मद्द करता है। अगर आप संगीत में किसी खास विधा को पसंद करते हैं, तो ट्विटर आपको उन लोगों तक पहुंचाने में मद्द करता है, जिनकी रुचि आपकी तरह ही संगीत की उस विधा में है। यानी इस माध्यम से हमारा लक्ष्य पृथ्वी के सभी हिस्सों तक पहुँचना है।

संक्षेप में कहें, तो लाखों भारतीय ट्विटर का इस्तेमाल दिन भर की खबरों से जुड़े रहने, क्रिकेट कमेंटरी और स्कोर की ताजा स्थिति जानने और फिल्म, राजनीति तथा खेल की हस्तियों के व्यक्तिगत विचार जानने के लिए कर रहे हैं। कोई भी आम आदमी ट्विटर पर एक मुक्त एकाउंट खोलकर ऐसा कर सकता है। इससे आसानी से वह उन हस्तियों तक पहुँच सकता है, जिनसे वह जुड़ना चाहता है। जैसा कि मैंने शुरू में कहा था कि भारत अलग है, लेकिन दुनिया को खोजने की प्यास, समान उद्देश्य के लिए काम कर रहे लोगों से जुड़ने की ललक और अपने विचार को प्रस्तुत करने की समझ ही वह धागा है, जो भारतीयों को पूरी दुनिया से जोड़ रहा है। कहना अतिशयोक्ति नहीं कि ट्विटर आज उन सभी विचारों और लोगों के सोशल मीडिया पर आने की प्रतीक्षा कर रहा है।

(लेखिका ट्विटर की वाइस प्रेसीडेन्ट हैं)

व्यक्तित्व

तथ्यों पर खरे उतरने वाले पत्रकार

वरिष्ठ पत्रकार जवाहरलाल कौल को जनसत्ता से रिटायर हुए करीब एक दशक हो चुके हैं, लेकिन उनकी कलम अभी रिटायर नहीं हुई। बल्कि सामाजिक सरोकारों के साथ उनकी कलम की कदमताल और तेज हो गई है। उनकी पत्रकारीय यात्रा आज भी अनवरत जारी है, बिना रुके, बिना थके।

-राकेश सिंह

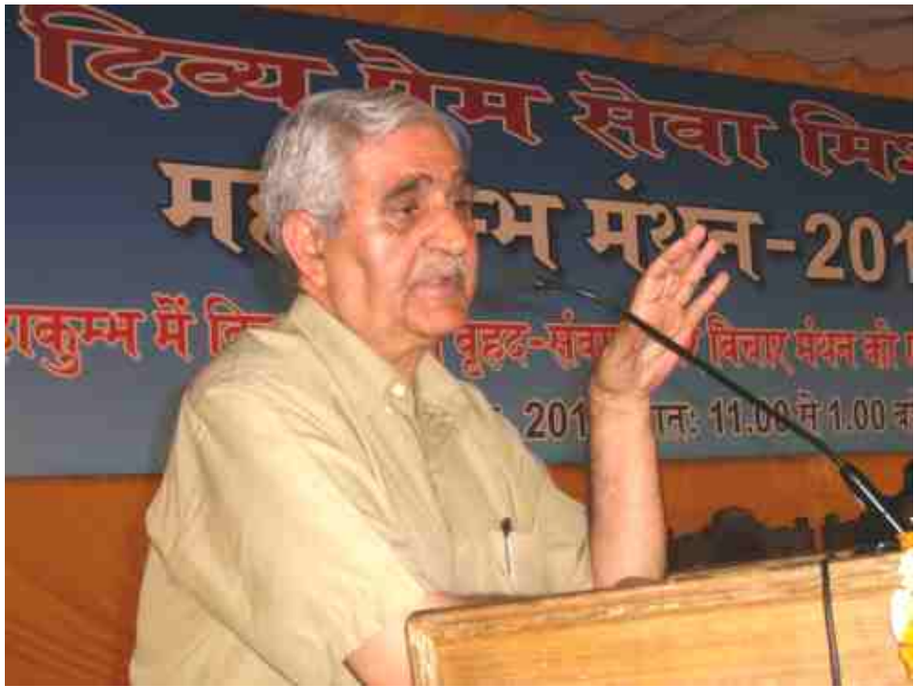

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए श्री जवाहर लाल कौल जी

जम्मू-कश्मीर की कुंडली में ही दोष है। प्रकृति की तरफ से उसे कई वरदान मिले हैं। पर वह वरदान लोक जीवन को नहीं मिले। जो धरती कश्मीरी पंडितों की विद्वता के लिए ख्यात थी आज बंदूकों और आतंकवादियों के लिए कुख्यात है। संस्कृति और ज्ञान परम्परा को पुष्पित-पल्लवित करने वाले कश्मीरी जन आज घाटी से बाहर हैं। पर धरती के इस स्वर्ग के बाशिंदों में विपरीत परिस्थितियों से दो-दो हाथ करने का हौसला और जज्बा बरकरार है। उन्हें नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोच प्रकट करने का हुनर आता है। वरिष्ठ पत्रकार जवाहरलाल कौल इसके जीते जागते प्रमाण हैं।

उन्हें जनसत्ता की नियमित पत्रकारिता से रिटायर हुए एक दशक हो चुका है, लेकिन उनकी कलम रिटायर नहीं हुई है। सामाजिक सरोकारों के साथ उनकी कदमताल और तेज हो गई है। श्रीनगर में 26 अगस्त, 1937 में जन्में जवाहरलाल कौल ने जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय से अंग्रेजी और हिन्दी में एम0ए0 किया। उसके बाद श्रीनगर के ही एक स्कूल में उन्होंने पढ़ाना शुरू किया। लेकिन यह काम उन्हें ज्यादा रास नहीं आ रहा था। इस काम को वह 'शटल ट्रेन' की तरह देखते थे। जो हर बार एक ही पटरी पर समान दूरी तक चलती है, सिर्फ सवारियां बदलती रहती हैं। इसी दौरान उनकी मुलाकात बलराज मधोक से हुई। बलराज मधोक श्रीनगर में संघ के प्रचारक रहे थे। जनसंघ में सक्रिय थे। उनसे बातचीत में एक मनमाफिक राह दिखी। बलराज मधोक ने जवाहरलाल कौल को पत्रकारिता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। बलराज मधोक ने ही जवाहरलाल कौल को हिन्दुस्तान समाचार के संपादक बालेश्वर अग्रवाल से मिलाया। यह बात 1963 की है। इसी साल जवाहरलाल कौल हिन्दुस्तान समाचार के साथ बतौर प्रशिक्षु संवादाता (ट्रेनी रिपोर्टर) के रूप में जुड़े। जवाहरलाल कौल के अंदर की प्रतिभा को बालेश्वर अग्रवाल ने पहली ही नजर में परख लिया। इसीलिए उनको देश की सबसे बड़ी पंचायत यानी 'संसद' को कवर करने का जिम्मा दे दिया। यह काम उन्हें अपने मिजाज के अनुकूल लगा। इसमें उनकी रुचि भी थी। मन मुताबिक काम मिला तो जवाहरलाल कौल उसमें रम गए। 77 साल की उम्र में भी उनका मन इसी में रमा है। पत्रकार जीवन की वह यात्रा आज भी जारी है, बिना थमे, बिना रूके। सत्ता के केन्द्र दिल्ली में लंबा वक्त गुजारने के बाद भी वे अपनी जन्मभूमि जम्मू-कश्मीर को नहीं भूले हैं। जम्मू-कश्मीर जब भयावह प्राकृतिक आपदा से जूझ रहा था तो संन्यास पहर में एक कर्मयोगी की तरह उन्होंने अपनी टीम के साथ मोर्चा संभाल लिया। कइयों को उनके अपनों से मिलाया। कइयों को उनके घर तक पहुंचाया। वे जम्मू-कश्मीर अध्ययन केन्द्र के साथ जुड़कर अपनी जड़ों से जुड़े हैं। विस्थापित कश्मीरी समाज को उनके पुरखों और इतिहास की याद दिलाते रहते हैं। इसके साथ ही वे प्रज्ञा संस्थान के अध्यक्ष एवं दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संरक्षक भी हैं।

जवाहरलाल कौल धुन के पक्के हैं। पत्रकारिता और जीवन में संतुलन बनाए रखना उन्हें बेहतरीन तरीके से आता है।

पत्रकारिता में उन्होंने कलम की ईमानदारी और धार पर खासा ध्यान रखा। बड़ी साफगोई से बात रखी। यह इतने यकीन से इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि पत्रकारिता की शुरूआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से करीबी वास्ता रखने वाले बालेश्वर अग्रवाल के संरक्षण में की। पत्रकारिता की राह उन्हें बलराज मधोक ने दिखाई। हिन्दुस्तान समाचार में काम करते हुए अभी सालभर भी नहीं बीता था कि उन्हें अज्ञेय की तरफ से बुलावा आ गया, दिनमान के लिए। यकीनन यह जवाहरलाल कौल की ईमानदार पत्रकारिता का प्रमाण है। दिनमान पत्रिका के साथ जुड़ने के बाद जवाहरलाल कौल ने देश के कई हिस्सों में आना जाना शुरू किया। यह 'टाइम्स ऑफ इंडिया' समूह की पत्रिका थी। दिनमान से पहले साप्ताहिक पत्रिका का चलन कम ही था। दिनमान की योजना 'टाइम मैगजीन' की तर्ज पर की गई थी। इस पत्रिका में संवाददाता और उप संपादक में अंतर नहीं था। जवाहरलाल कौल भी दिनमान के साथ बतौर संवाददाता सह उप संपादक के रूप में जुड़े। दिनमान से जुड़ने के बाद जवाहरलाल कौल ने देश के अन्य हिस्सों से भी रिपोर्टिंग शुरू की। अहमदाबाद के दंगों से लेकर चासनाला, धनबाद खान दुर्घटना में 250 मजदूर खान में दब गए थे। इसी दौरान जवाहरलाल कौल की शिबू सोरेन से पहली बार मुलाकात हुई। उस समय शिबू सोरेन का नाम सरकारी फाइलों में कुख्यात अपराधी के रूप में दर्ज था। टुंडी थाने के आस-पास करीब 100 किलोमीटर के क्षेत्र पर शिबू सोरेन की समानांतर सरकार चलती थी। जवाहरलाल कौल ने शिबू सोरेन से मिलने के लिए संदेश भिजवाया। सोरेन ने जवाब भेजा कि सरकारी अधिकारी को वापस भेजो, मुलाकात में कोई हर्ज नहीं। जवाहरलाल कौल ने इलाके के एसडीएम को वापस भेज दिया और शिबू सोरेन से मिलने अकेले ही जंगल की ओर निकल पड़े। इस मुलाकात ने उन्हें आदिवासी इलाके के लोगों की नब्ज टटोलने का एक अवसर उपलब्ध कराया, जिसका आंकलन दिल्ली में बैठकर नहीं हो सकता था। जवाहरलाल कौल दिनमान के उस दौर की एक घटना को याद करते हुए बताते हैं, 1977 में मै रायबरेली चुनाव कवर करने गया था, यहाँ से इंदिरा गांधी चुनाव लड़ रही थीं। इंदिरा गांधी के सामने जनता पार्टी के राजनारायण थे। वहां से लौटने के बाद मैने रिपोर्ट फाइल की। उस रिपोर्ट का निष्कर्ष था कि इंदिरा गांधी चुनाव हार रही हैं। उस समय दिनमान के संपादक रघुवीर सहाय को मेरी रिपोर्ट पर यकीन नहीं हुआ। उसके कई कारण हो सकते थे। किसी पार्टी या व्यक्ति के पक्ष में झुकाव भी हो सकता था, जैसा कि हम सबमें होता है। रिपोर्ट पर विश्वास न होने के बावजूद संपादक ने मेरी रिपोर्ट रोकी नहीं, छापी। ऐसे हुआ करते थे उस दौर के संपादक। हांलाकि इसके तुरंत बाद एक और रिपोर्टर को रायबरेली भेजा गया, मेरी रिपोर्ट की हकीकत जानने के लिए। उस रिपोर्टर ने लौटकर रिपोर्ट लिखने की बजाय बीमारी का बहाना बनाकर छुट्टी ले ली। क्योंकि उस रिपोर्टर को पता था कि रायबरेली चुनाव की यह हकीकत संपादक को रास नहीं आएगी। जवाहरलाल कौल उस दौर के संपादक नाम की संस्था के तेवर को समझने के लिए एक और घटना बताते हैं। बिहार के कुछ समाजवादी नेताओं की बातचीत का सिलसिला चल रहा था। एक समाजवादी नेता से पहले बातचीत हुई थी। उनके इंटरव्यू के खिलाफ संपादक को पत्र लिखा। दिनमान में वह पत्र छपा और साथ ही नीचे लिखा गया, दिनमान अपने रिपोर्टर के इंटरव्यू पर कायम है। दिनमान में सफल पारी खेलने के बाद अब बारी थी जनसत्ता की। यह वह दौर था जब जनसत्ता की खबरें, समाज और सत्ता दोनों में हलचल पैदा कर रहीं थी। उसका संपादकीय पृष्ठ लोगों को झकझोर रहा था। इसी दौर में प्रभाष जोशी ने जवाहरलाल कौल को जनसत्ता से जुड़ने का आमंत्रण दिया। जवाहरलाल कौल ने जनसत्ता से जुड़ना तय किया और प्रभाष जोशी ने संपादकीय पृष्ठ की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी। जनसत्ता से जुड़ने के साथ ही जवाहरलाल कौल 'कौल साहब' के उपनाम से पहचाने जाने लगे। उन्होंने जनसत्ता के पाठकों को विज्ञान से विदेश नीति तक और कृषि से उद्योग तक के विषय से जोड़ा। जवाहरलाल कौल तथ्यों को पवित्र मानते हैं। तथ्यों से छेड़छाड़ उनकी नजर में अपराध है। आज जब रिपोर्टर तथ्यों से छेड़छाड़ या फिर तथ्यों को छिपाते हैं तो उन्हें दर्द होता है। यह उस पत्रकार का दर्द है, निष्पक्षता जिसकी पूंजी है। वह यह भी मानते हैं कि विचार हरेक के अलग-अलग हो सकते हैं, होने भी चाहिए।

जवाहरलाल कौल ने एक किताब भी लिखी है। इस किताब का नाम है 'पत्रकारिता का बाजार भाव'। यह किताब कई पत्रकारिता सिखाने वाले संस्थानों में शामिल है। जवाहरलाल कौल पत्रकारिता के बाजार को कुछ इस तरह समझाते हैं, 'अंग्रेजी बड़े व्यापार की भाषा है, इसलिए मीडिया घराने चाहते हैं कि अंग्रेजी ही फैले। इसे टाइम्स आफ इंडिया और नवभारत टाइम्स की घटना से समझ सकते हैं। एक दौर था जब नवभारत टाइम्स की प्रसार संख्या टाइम्स आफ इंडिया से ज्यादा थी। लेकिन 'फ्लैगशिप' टाइम्स को सीमित किया गया। इस ग्रुप के ज्यादातर अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया की रक्षा के लिए हैं। उसकी रक्षा करते हुए वह मरते है तो मर जाएं। जवाहरलाल कौल मानते हैं कि बाजार का एक अंग है अखबार। कोई अखबार अब किसी खास पाठक या वर्ग के लिए नहीं है। पहले अलग-अलग अखबारों के अलग-अलग पाठक वर्ग होते थे। अब बाजार में जो बिकता है वही अखबार छापता है। 'यही है आज की पत्रकारिता का बाजार भाव।'

★ ★ ★ ★ ★

समारोह

सेवा भारत का स्वभाव है

-भैया जी जोशी (सरकार्यवाह-राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)

आज आशीष जी ने हम सभी से वृक्षारोपण का शुभ कार्य भी करवाया है। ऐसा अवसर प्राप्त करवाने के लिए मैं उनको प्रथम ही धन्यवाद देता हूँ। कभी-कभी लगता है आज अपने आस-पास के परिवेश में वेदना निर्माण करने वाला दृश्य दिखाई देता है। कहीं महिलाओं के असुरक्षित जीवन को देखते हैं, कहीं अपने नैतिक मूल्यों का क्षरण होते हुए, अनाचार के मार्ग पर चलते हुए लोगों को देखते हैं, कहीं मिथ्याचार का, कहीं दुराचार का वातावरण है। मैं समझता हूँ कि ऊपर बैठी हुई ईश्वरीय शक्ति इस सारी भूमि को, विशालता को संतुलित करने के लिए कुछ पवित्र आत्माएं भूमि पर भेजती है। ऐसी पवित्र आत्माओं में आशीष गौतम का नाम लिया जा सकता है। वह एक सामान्य जीवन जीने वाला जन्म लिया व्यक्ति है। हिमालय की इन पहाड़ियों में आते हैं। साधना करते हुए मुक्ति, मोक्ष की कामना के लिए निकला एक नौजवान, उस मोह का त्याग करते हुए, मोक्ष की कामना को तिलाञ्जलि देते हुए और अपने ही समान दिखने वाले बन्धुओं की पीड़ा को समझा, मोक्ष मार्ग को छोड़कर इस सेवा के मार्ग पर चल पड़े हैं। आचार्य बालकृष्ण जी कह रहे थे कि कभी-कभी वैराग्य आता है तो मैं कहता हूँ कि वह वैराग्य नहीं कभी-कभी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ही हिमालय की चोटियों पर जाते होंगे। आज का यह सारा परिदृश्य देखकर दिव्य प्रेम सेवा मिशन क्या करता है यह सब बताने की आवश्यकता नहीं है। हमने अपनी आँखों से यहाँ का परिदृश्य देखा है। यहाँ के बालकों के विकास का एक दर्शन हम लोगों ने यहाँ किया है। जिस प्रकार की प्रसन्नता इन बालकों के चेहरे पर हम देख रहे हैं, मैं समझता हूँ कि भारत की भावी दिशा तय करने वाला, एक-एक बालक यहाँ से तैयार होकर अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए आने वाला है। अभी एक गीत चल रहा था कि 'भारत की जयकार होगी' यह तो भविष्य हो गया है। आज हम अनुभव कर रहे हैं कि भारत की जयकार हो रही है और होना प्रारम्भ हो चुका है, इसलिए होने की राह देखने की आवश्यकता नहीं, अब हम उस रास्ते पर चल पड़े हैं। स्वामी रामदेव जब इंग्लैण्ड प्रवास पर प्राणायाम के विषय को लेकर गये थे तो वहाँ की रानी से महाराज ने कहा कि आप ने हमारे देश पर राज किया है, हम आप की सांसों पर राज करेंगे। भारत का गौरव यह इसकी नियति है यही इसका भाग्य है। यह होने वाला है, और इस यात्रा में हमारा योगदान क्या होगा। यह निश्चय करने की आवश्यकता है। भारत का वैभव, भारत का गौरव विश्व मंच पर स्थापित होने की प्रक्रिया कई वर्षों से प्रारम्भ हुई। आज हम एक विशेष अवस्था में पहुँचे हैं। वास्तव में सेवा भारत का स्वभाव है। यहाँ पर कभी किसी को सेवा सिखाने की आवश्यकता नहीं, यहाँ के रक्त में सेवा है, यहाँ की जीवनशैली में सेवा है, यहाँ की परम्पराओं में सेवा है, हम सबकी मान्यताओं में सेवा है। हमने तो जब कहा कि प्राणिमात्र में ईश्वर है उन्हीं विचारों के साथ हमने यह स्वीकार कर लिया कि हम एक दूसरे की संवेदना को जानते हैं, पीड़ा को जानते हैं। जब कभी हमारे पूर्वजों ने सर्वे भवन्तु सुखिनः का नारा दिया होगा तो वह किसी भारत की एक सीमा में रहने वाले लोगों के बारे में नहीं कहा बल्कि सारे विश्व में रहने वाले मानव समूह के बारे में कहा। सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ हों इतना विशाल विचार भारत के सिवा और किसने दिया है। हम अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करते हैं कि ऐसे भारत के हम नागरिक हैं कि जिस भारत ने ऐसे श्रेष्ठ विचारों की, श्रेष्ठ संस्कृति को जन्म दिया है, और केवल संस्कृति परम्परा कहने की बात नहीं वो हमारी जीवन शैली में उतरा, इसलिए आज हम देखते हैं कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी, जो कुछ उसके पास है उसमें से कुछ न कुछ देता है और देने की इच्छा रखता है। महिलाएँ मंदिरों में जाती हैं, तो वहाँ परिसर में रहने वाली छोटी चीटियों को भी कुछ मिलना चाहिए, तो कहीं चावल, चीनी और आटा डालती हैं, ये किसने सिखाया भारत की महिलाओं को, घर के दरवाजे पर खड़ी गाय को रोटी खिलाना ये किसी ने सिखाया नहीं, हमारे यहाँ कोई भिक्षा लेने आता है तो उसको नमस्कार करके भिक्षा दी जाती है और भिक्षा देने वाला अपना सौभाग्य समझता है कि हमारे दरवाजे पर कोई भिक्षा लेने आया है। यह भारत की परम्परा है। पर आज कई गलत धारणाएँ बनी हैं कि सेवा है तो विदेशी मिशनरियों की ओर देखना पड़ेगा, हम उनकी सेवा की भावना का सम्मान करते हैं, हमारे अन्तः करण में उसी प्रकार की सेवा भावना है। उसको निरन्तर जागरूक करते हुए कर्तव्यों का पालन करना हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। दुनिया में लोग कई प्रकार की सेवा करते हैं, स्वार्थ रहता है, थोड़ा बहुत मेरा नाम हो जाय, कोई पुरस्कार मिल जाय। हर राजनेता कहता है कि मैं तो सेवा करने के लिए ही जा रहा हूँ, पर बहुत थोड़े लोग होते हैं जो सेवा का भाव बनाए रखते हैं। जिनमें कुछ आज इस मंच पर हैं। जिन्होंने राजनीति को सेवा का साधन नहीं माना है। जिन्होंने सेवा को साधना के रूप में स्वीकार किया। साधना के रूप में करते रहे, कोई अपेक्षा नहीं रही। मैं कभी-कभी अनुभव

करता हूँ कि लोग नाम की बड़ी इच्छा करते हैं। कुछ दिया है तो मेरा भी नाम हो जाय इससे भी मुक्त होने की आवश्यकता है। कुछ लोग हैं जो सेवा के नाम पर किस प्रकार का व्यवहार इस देश के अन्दर करते हैं। देश के अन्दर गरीबी का, अज्ञान का लाभ उठाते हुए अपने विचारों की स्थापना करने के लिए अपनी सेवा को जिन्होंने आधार बनाया, इस समाज को दुर्बल करने की प्रक्रिया चलाते रहे, ऐसी शक्तियों को भी हम सबको समझने-परखने की आवश्यकता है। चैरिटी शब्द चलता है इस चैरिटी शब्द से भी सेवा शब्द अधिक पावन व पवित्र है। सेवा क्षेत्र में काम करने वाले कभी किसी पर उपकार नहीं करते। गत शताब्दी में स्वामी रामकृष्ण परमहंस हों, स्वामी विवेकानन्द हों इन्होंने अपने ही समाज के दुर्बल वर्ग को सामने रखते हुए कहा कि मैं तो दरिद्र नारायण हूँ, इनको भी नारायण कहा। नारायण मानने की परम्परा इस देश के अन्दर है। दरिद्र देवो भव: ऐसा कहा है। स्वामी विवेकानन्द उसके आगे बढ़कर कहते हैं, ईश्वर इस रूप में हमारे सामने आता है और परीक्षा लेता है कि क्या तुम वास्तव में भगवान को मानते कि नहीं मानते हो। इसलिए भारत में सेवा की परम्परा सेवा का भाव एक भिन्न प्रकार का रहा। संस्थाएँ बनाकर सेवा करने की पद्धति भारत में नहीं थी परन्तु हमने संविधान स्वीकार किया उस संविधान के कारण संस्थाएं बनानी पड़ती हैं, संस्थाओं के द्वारा सेवा कार्य करना पड़ता है। मैं समझता हूँ कि सेवा के लिए न संस्था की आवश्यकता है न धन की, बल्कि एक संवेदनशील अन्त:करण की आवश्यकता है। जिसके अन्त:करण में संवेदना है वही इसको नारायण अथवा भगवान मानकर सेवा करने के लिए आगे आता है, भाव के बने रहने की आवश्यकता है। जब एक ही चैतन्य हम सबके अन्दर व्याप्त है तो उस चैतन्य की उस चेतना शक्ति को, उस ईश्वरीय अंश को पहचानकर हम एक दूसरे के साथ खड़े रहें इसकी आवश्यकता है। देश के अन्दर क्षमताएं हैं, प्रतिभाएं हैं, साधनों के अभाव में पिछड़ जाती होंगी लेकिन छुपकर नहीं रह सकतीं। इस देश में 8 करोड़ के लगभग वनवासी वर्ग है, जब हम जाते हैं वनवासी क्षेत्रों में तब दिखाई देता है कि कितनी प्रामाणिकता उनके हृदय में हैं, किस प्रकार उनमें अपनी परम्पराओं के प्रति निष्ठा है। किस प्रकार से वह दूसरों की सहायता करने के लिए खड़े हो जाते हैं। लोग सोचते हैं कि हम वनवासियों को देने के लिए जायेंगे। मैं तो कहता हूँ कि वनवासियों से कुछ सीखने के लिए जायें। साधन देना बड़ी आसान बात है, गुणों को सीखना बड़ा कठिन होता है। अगर सीखना है तो वनवासी बन्धुओं से भी सीखने लायक बहुत बातें हैं। वहां की प्रतिभाओं को खोजना पड़ेगा, क्षमताओं को पहचानना पड़ेगा, अवसर उपलब्ध कराने पड़ेंगे। समाज में 30 से 35 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीने वाला वर्ग है। अपने यहाँ की गलत धारणाओं के चलते उपेक्षा का जीवन जीने वाला जिसको हम हरिजन कहते हैं, दलित के शब्दों से वर्णन करते हैं, वह करोड़ों की संख्या में है। सुबह-शाम के अपने भोजन की चिन्ता में 12 से 16 घंटे मेहनत करने वाला मजदूर वर्ग है। 9-10 करोड़ वनवासी हैं, अपने ही समान वर्ग है। उन्हें अपनेपन का दर्शन कौन करवायेगा। इसलिए समाज के सम्पन्न वर्ग ने इन संस्थाओं के द्वारा अपने दायित्व का वहन करते हुए, अपने जीवन में इनका भी कुछ स्थान है, ऐसा मानकर कर्तव्य के भाव से ऐसी संस्थाओं को बल देने की आवश्यकता है। समाज की दायित्व शक्ति के आधार पर ही इस प्रकार के कार्य चलते हैं। अन्यान्य भाव से इस प्रकार की व्यवस्थाएं करना बड़ा कठिन है। हम ये सारी जिम्मेदारी सरकार पर नहीं छोड़ सकते, सरकार व्यवस्थाएं दे सकती है, सुविधाएं दे सकती है, परन्तु सामाजिक परिवर्तन, समाज का उत्थान इस प्रकार की भावनाएं सरकार से नहीं समाज के अन्त:करण से होने वाली हैं। इस अन्त: करण को खोलकर हम समाज के सामने आएं, इसकी आवश्यकता है। आने वाला भारत का भविष्य अगर युवा तय करने वाला है, तो वह युवा बाल अवस्था से खोजना पड़ता है।

(दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में दिये गये उद्गार)

मैं जब भी आशीष जी को देखता हूँ, तो सोचता हूँ कि इनसे नया क्या प्राप्त किया जाय। आशीष जी का जीवन एक ऐसी किताब है, जिसके हर पन्ने से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है, प्रभु से कामना करता हूँ कि भगवान इनकी दीर्घायु करें। इनका जीवन आदर्श है। हमारे देश को ऐसे नींव के पत्थरों की आवश्यकता है। देश की आजादी के बाद लगता है, हमने उसको आंकने का काम नहीं किया। जिस समूह की यहाँ सेवा हो रही है, उसमें हमें शुरू से साथ मिला। लोकतंत्र में सत्ता से कैसे काम लिया जाय यह चाणक्य जैसों ने ही बताया है। यहाँ पर सीखने-समझने का अवसर मिलता है।

-संतोष कुमार गंगवार (राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार-भारत सरकार)

हमारा हमेशा यह प्रयास रहा है कि भारतीय धर्म दर्शन, संस्कृति का उद्घोष करने वाली पुस्तकों का हम प्रकाशन करें। **'कुंभ आस्था का प्रतीक'** पुस्तक भी उसी श्रृंखला की एक कड़ी है। कुंभ केवल एक धार्मिक पर्व न मानकर हमको ये लगा कि यह आस्था का प्रतीक है। यहां पर भिन्न-भिन्न विषयों पर लोग अपने विचार रखते हैं। उसमें से जो निष्कर्ष निकलता है, **'कुंभ आस्था का प्रतीक'**। मैं आभारी हूँ, आशीष भैया एवं संजय जी का इस पुस्तक के प्रकाशन का अवसर दिया।

-प्रभात जी (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)

समारोह

पुरुषार्थ किये बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता।

-म.म. स्वामी कैलाशानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज

महाभारत के राजसूय यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा कि महाभारत काल में राजसूय यज्ञ के समय श्रीकृष्ण भगवान ने यज्ञ में जूठे पत्तल उठाने की सेवा की जिससे वह अग्रसेवा के अधिकारी बने। भगवत सेवा करने वाला अग्रपूजा का अधिकारी होता है। आशीष जी को भीष्म की संज्ञा देते हुए कहा कि भीष्म की बुद्धि हमेशा कुंवारी रही कभी व्याही नहीं। इसी तरह आशीष जी की बुद्धि सेवा मिशन के प्रति कुंवारी है। विश्व की आध्यात्मिक राजधानी हरिद्वार है। यहां इस पवित्र कार्य से आप सभी लोग जुडे हैं यह बहुत बड़ा सौभाग्य है। हरि के द्वार में वृक्षारोपण का अवसर मिल रहा है। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार पूर्व जन्म में किया हुआ कर्म ही भाग्य कहलाता है, इसलिए पुरुषार्थ किए बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता। हमारे पौराणिक ग्रंथ बतलाते हैं कि मनुष्य के भीतर की आत्मा उसके भाग्य से भी अधिक शक्तिशाली है। किंतु इसके साथ ही कर्म को भी अत्यधिक महत्व दिया है। सही तरीके से किया गया कर्म ध्यान बन जाता है। पूर्ण निष्ठा से किया गया कर्म हमारी चेतना का विकास भी करता है। अत: हमें अपने कर्म ऐसे करने चाहिए जैसे कि हम प्रार्थना करते हैं। यदि सही तरीके से पूर्ण निष्ठा के साथ कर्म किया जाए तो व्यक्ति की प्रगति दस गुना अधिक होती है। अतएव प्रत्येक व्यक्ति को कर्म केवल व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से नहीं बल्कि ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना से करना चाहिए। जीवन के चार आश्रमों को देखें तो भी हम समझ जाएंगे कि सेवा का महत्व क्या है। ब्रह्मचर्याश्रम में व्यक्ति जीवन की तैयारी करता है। गृहस्थाश्रम में जीता है, सृष्टि को आगे भी बढ़ाता है। माया व्यक्ति के जीवन में प्रवेश करती है। वानप्रस्थ में माया निवृत्त हो चुकी होती हैं। व्यक्ति यहां स्वयं से बाहर निकलने लगता है। अर्थ और कामनाओं से बाहर निकलने का प्रयत्न करता है। धर्म का आधार बढ़ने लगता है। संन्यासाश्रम में स्व की प्रवृत्तियां बदलकर निवृत्ति की ओर अग्रसर होता है। दूसरों के लिए जीना संन्यास का लक्ष्य है। इसी में से अपना निर्वाण मार्ग भी ढूंढ लेता है। इसके बिना न व्यक्ति कामनाओं से मुक्त होता है, न ही कर्म से। कर्म-फल के कारण ही तो जीव बार-बार जन्म लेता है। भावपूर्ण सेवा हर व्यक्ति को निर्वाण मार्ग उपलब्ध कराती है। गंगा के दर्शन करने मात्र से व्यक्ति शुद्ध हो जाता है। इस हरिद्वार में आप के द्वारा वृक्षारोपण होता है। प्रतिवर्ष 1 पेड़ लगाने का संकल्प लिया गया। आशीष जी निरन्तर सेवा में लगे हुए हैं हमारी सबकी भी थोड़ी सेवा मिशन के लिए हो जाय तो बड़े भाग्यशाली होंगे। दिव्य प्रेम सेवा मिशन में बिखरे परिवार एक किये जाते हैं। मिशन की परम्परा और यहां का ज्ञान पूरे विश्व में जाना चाहिए।

(दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में दिये गये उद्गार)

आशीष जी के सेवा कार्यों में सहयोग करना चाहिए

-आचार्य बालकृष्ण जी (महामंत्री-पतंजलि योगपीठ)

जब किसी दिव्य व्यक्ति के अन्दर ईश्वर प्रेरणा प्रदान करता है तो उसका स्वरूप भी दिव्य ही होता है। जो पिछड़े हैं, दीन हैं उनके प्रति हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिए उसका मूर्तरूप ही दिव्य प्रेम सेवा मिशन है। आप सब भी उसी प्रेरणा से जुड़े हुए हैं। दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट और दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना समान काल में ही हुई थी। हम पहले गंगोत्री में थे उसके बाद में आशीष जी पहुँचे थे तब से आज तक साथ में ही हैं। हमें इनके सेवा कार्य में सहयोग करना चाहिए। आज यह सेवा कार्य पुष्पित पल्लवित हो रहा है। आज फूलों की जगह यहां फलों से स्वागत हुआ है। अगर आशीष जी इस सेवा कार्य में शिथिल पड़ते हैं, तो इसमें आशीष जी का नहीं हमारा दोष होगा। जितने भी सेवा कार्य हैं उनके हम साक्षी बनें। ऋषि न बन सकें तो उनके अनुयायी बनें और उनके समान कुछ कर सकें तो यह हमारे जीवन की सफलता होगी। उन्हीं ऋषियों और महापुरुषों से प्रेरणा पाकर हमने इस जीवन को आगे बढ़ाया है। प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं, कि प्रभु तुमने जिस कार्य के लिए यह जीवन दिया, इस जमीन पर भेजा, जो परमात्मा की अपेक्षाएँ, आकांक्षाएँ रही होंगी तो जब हम इस दुनिया से जायें तो प्रभु से कह सकें, आपने जिस इच्छा से हमें इस धरती पर भेजा था, हमने उस इच्छा को पूरा करने के लिए कोई न्यूनता नहीं बरती है, अगर कोई कमी रह गयी हो तो पुन: संसार में भेजना तो हम पूरी करके लौटेंगे। इस दृढ़ता से समाज में देश का कार्य करने के लिए समय अनुकूल है। आशीष जी के अनुसार राज्याश्रय में रहने वाली संस्थाओं का वजूद समाप्त हो जाता है। राज्याश्रय हमें इतना ही चाहिए कि हम अपने भाव को आगे बढ़ा सकें। (दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में दिये गये उद्गार)

समारोह

सेवा ही स्थाई कार्य है जो जन्मों तक साथ जायेगी

-योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज

घर में परिवार में हम साथ मिलकर रहें, जो साथ मिलकर नहीं चलता वह ईश्वर की आज्ञा को नहीं मानता। शासन का काम अच्छी नीतियां बनाना होता है। देश का निर्माण तो अच्छे नागरिक करते हैं। जिस दिन सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी अपने कर्तव्य को समझकर पुरुषार्थ की पराकाष्ठा पर पहुंच जायेंगें, उस दिन हिन्दुस्तान के अच्छे दिन आ जायेंगे, और पूरे विश्व का नेतृत्व करेगा। भगवान ने एक-एक व्यक्ति में अपार शक्ति दी है। हम उस शाश्वत के प्रतिनिधि हैं। यह हमारी मूल पहचान है, यह हमारा मूल स्वभाव है, यह हमारी मूल प्रकृति है। सृष्टि में श्रेष्ठ रचना के रूप में उस भगवान ने हमको गढ़ा है और अपार ज्ञान, शक्ति, सामर्थ्य देकर इस धरती पर जन्म देने वाले उस परमात्मा ने अपना काम कर दिया। भगवान का विधान तो पूर्ण निर्दोष है, हमें अपने काम को इतनी ऊंचाइयों तक लेकर जाना है कि हमारे होने से ऋषियों के होने का अहसास हो। हम कब तक कहते रहेंगे कि गौतम, पतंजलि, कणाद, रामकृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द महान थे। हम ऐसे बनें कि हमारे अन्दर विवेकानन्द दिखें, दयानन्द दिखें, हमारे भीतर गौतम, कणाद, जमदग्नि, पतंजलि दिखें, हमारे भीतर हनुमान, शिव दिखें। अयोध्या में राम मंदिर कब बनेगा ये बाद का विषय है, लेकिन हमारे अन्दर राम दिखें। हम चलते-फिरते देवालय बनें, ऐसा अपने जीवन को बनाना है। ऐसी हमारे शास्त्र, वेद और सन्त प्रेरणा देते हैं। भाई आशीष के बारे में जो भी बोलता है, पहले आशीष ही निकलता है। आलोचक भी बोलेगा तो पहले आशीष ही देगा। बाद में जो भी बोले। भाई आशीष जी बहुत दिव्यता एवं प्रामाणिकता के साथ अपने मोक्ष के साथ-साथ सबका मोक्ष कर रहे हैं। मोक्ष का मतलब छूटना, मुक्ति, कामना से मुक्ति यही मोक्ष है। दु:ख कामना है। सुख की कामना हमें दु:ख देती है। आप के पास सब कुछ है फिर भी भोग नहीं कर रहे यह त्याग है। वैयक्तिक जीवन में त्याग सार्वजनिक जीवन में वैभव यही हमारी परम्परा है। काम के लिए काम करना, भगवान के लिए काम करना, उस परमात्मा की प्रेरणा के अनुसार जीना, अपनी कामना छोड़ना और दिव्य जीवन युक्त हो जाना, यह जीवन की उपलब्धि है। अस्तित्व के प्रति जो हमारे कर्तव्य हैं वही ईश्वर की पूजा है। हमारा जीवन पूरे अस्तित्व के लिए हो, इसी मार्ग पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन चल रहा है। सेवा ही स्थाई कार्य है जो जन्मों तक साथ जायेगी। जीवन अनादि अनन्त काल तक रहने वाला है, सेवा और साधना ही साथ जायेगी। हम जब भी वन्देमातरम् बोलें तो वन्देमातरम् कुंज की हमें याद आये और कुछ ऐसा मिलकर करें कि एक हजार वर्षों तक हमारे देश का कोई कुछ न बिगाड़ सके।

(दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में दिये गये उद्गार)

एमडीएच के मालिक जैसा बनने के लिए छह मंत्र

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में एमडीएच कंपनी के प्रबंध निदेशक महाशय धर्मपाल कार्यक्रम में उपस्थित लोगों से सीधा संवाद करना चाहते थे, लेकिन गले में खराबी के कारण उन्होंने मन की बात पत्र के माध्यम से लोगों तक पहुंचाई। उन्होंने कहा कि संत महात्मा और बुजुर्ग कहते हैं कि जो मुकद्दर में लिखा है वह जरूर मिलेगा। यदि हम बबूल का पेड़ बोएंगे तो आम कहां से खाएंगे। उनका मानना है कि आदमी बेईमानी, धोखे से पैसा कमा लेता है, जबकि उसके मुकद्दर में 100 रूपये लिखा है और वह बेईमानी से 150 कमा लेता है फिर भी वह कहता है कि मैंने चतुराई से 50 रूपये ज्यादा कमा लिए हैं। यही 50 रूपये घर में बीमारी और कई परेशानियों में लग जाते है। पाप के बिना फालतू पैसा नहीं आता है। मसालों के बादशाह ने यह भी कहा है कि पाप की कमाई से आदमी घर वालों को खुश करने के लिए जो भी साधन जोड़ता है मरते वक्त वही चीजें उसको देखकर हंसती हैं। उस वक्त आदमी इस बात को लेकर रोता है कि मैंने पाप क्यों किए। एमडीएच कंपनी के मालिक महाशय धर्मपाल का कहना है कि मेरा जैसा बनना चाहते हैं तो छह बातों पर अमल करो। ईमानदारी, मेहनत, मीठे बोल, कृपा परमात्मा की, आशीर्वाद माता-पिता का और प्यार संसार का।

समारोह

सेवा मिशन के कार्यकर्ता अपनी संवेदनाओं का ठंडा न होने दें

-म.म.स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

संसार में जीव आता है तो यह सोचता है कि किसी ने अच्छा कार्य किया तो उसे अच्छा जिसने बुरा कर्म किया तो उसे बुरा फल मिला।संसार में हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि हम संसार में क्यों आये। ईश्वर ने हर व्यक्ति को जिम्मेदारी के लिए भेजा। परन्तु ईश्वर को सबसे बराबर ही प्रेम होता है। हमें जिन्दगी निश्चित समय के लिए मिली है इसलिए हम कोई जिम्मेदारी लें और उसे पूरा करें। उन्होंने कहा कि संवेदना सभी मनुष्यों के अन्दर होती है मात्रा कम या ज्यादा हो सकती है। परमात्मा ने हमें संसार में क्यों भेजा है इस पर भी विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर मनुष्य संवेदनशील है परिवार के प्रति, गांव के प्रति, जिले के प्रति जब राष्ट्र के प्रति सोचने लगता है तो संवेदनशीलता का दायरा बढ़ जाता है। दिव्य प्रेम सेवा मिशन उसी संवेदना के कार्य को आगे बढ़ा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आगे बढ़ा रहा है, संवेदना के रूप को प्राप्त कर रहा है। मानव जीवन आशाओं और आकांक्षाओं से सर्वदा भरपूर रहता है। किन्तु समस्त इच्छाएं किसी की भी पूर्ण नहीं होती। मनुष्य की जितनी इच्छाएं बढ़ती हैं उतनी उसकी व्याकुलता, बेचैनी और अशांति बढ़ती जाती है। वैसे मानव मन के एक कोने में शान्ति की भी इच्छा रहती है, सुख की भी कामना रहती है, लेकिन शान्ति की इच्छा रखने से शान्ति नहीं मिलती, बल्कि इच्छाओं के शान्त होने से शान्ति मिलती है। सुख की कामना करने से सुख नहीं मिलता, उसके लिए उसी तरह का प्रयास करने से जीवन में सफलता मिलती है। मनुष्य जितनी इच्छाओं के भंवर में भटकेगा उतनी ही उसकी व्याकुलता बढ़ती जाएगी। व्याकुलता से लोभ उत्पन्न हो जाएगा, लोभ से तृष्णा फलित होगी फिर इंसान छल-कपट की दुनिया में प्रवेश कर जाएगा और अन्त में वह सिर्फ अन्तहीन यात्रा का मुसाफिर बनकर ही रह जाएगा। जिसकी न कोई मंजिल होगी, न ही कोई उद्देश्य होगा, न ही उसका कोई लक्ष्य होगा और न ही उसकी कोई निश्चित दिशा होगी। अन्तिम समय में उसे पता चलेगा कि मैंने अपना अनमोल जीवन कंकड़-पत्थर बटोरने में लगा दिया। मुझसे कहां कैसे और क्या-क्या गलतियां हुई हैं। इंसान उस समय रुदन करता है, अपनी किस्मत को कोसता है, अपना माथा पीटता है, कोई उससे उसकी आपबीती पूछे तो वह कुछ किसी को बताता नहीं, अगर कोई उसकी दु:ख भरी कहानी सुनना चाहे तो किसी को वह सुनाता नहीं। उस समय उसके वक्त और हालात ऐसे हो जाते हैं कि वह न चाहते हुए भी दया का पात्र मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए समय रहते इंसान को चेतना चाहिए। जीवन में हर कोई कहीं न कहीं अभाव जरूर महसूस करता है। किंतु जो इंसान परमात्मा के प्रभाव को महसूस करता है, उसे हर वक्त अपने संग महसूस करता है, वह कभी किसी भी तरह की परिस्थितियों के दबाव में नहीं आता, बल्कि परिस्थितियां ही उसकी दास बनकर रह जाती हैं। उन्होंने कहा कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन के कार्यकर्ता अपनी संवेदनाओं को ठंडा नहीं होने दें। जीवों के प्रति, मनुष्यों के प्रति संवेदना होनी चाहिए। अपनी संवेदना को जिन्दा रखें। अलग-अलग हम सेवा नहीं कर सकते हैं तो मिशन ने एक प्लेटफार्म दिया है जिसके माध्यम से हम सेवा कर सकते हैं।

(दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में दिये गये उद्गार)

दिव्य प्रेम सेवा मिशन का वार्षिक सम्मेलन वन्दे मातरम् कुंज गंगा भोगपुर तल्ला में योग गुरू स्वामी रामदेव जी महाराज के सांनिध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। सम्मेलन में संस्था की विभिन्न कार्ययोजनाओं पर विचार किया गया। संचालन समिति की बैठक में स्वच्छ भारत, विदेश पर्यटन, पर्यावरण, मिशन का आर्थिक प्रबन्धन, एवं अर्ध कुम्भ हरिद्वार सहित आठ प्रस्ताव पारित किये गये। सेवा मिशन द्वारा चलाये जा रहे हरित भारत अभियान के अन्तर्गत संस्था सदस्यों एवं सहयोगियों द्वारा 11 हजार पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर कुम्भ 2010 में मिशन द्वारा 12 दिन तक अलग-अलग विषय पर व्याख्यान माला कुम्भ मंथन में व्यक्त विचारों से संग्रहित संजय चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'कुम्भ आस्था का प्रतीक' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। प्रथम सत्र में संचालन समिति की बैठक को म.म. कैलाशानन्द ब्रम्हचारी जी, एवं म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द जी ने अपना आशीर्वाद दिया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता एमडीएच मसालों के प्रबन्ध निदेशक महाशय धर्मपाल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में भैया जी जोशी (सरकार्यवाह,राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) उपस्थित थे। दिव्य प्रेम सेवा मिशन एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के बच्चों द्वारा मुख्य दशावतार, योगासन एवं पिरामिड का सुन्दर मंचन किया गया। इस मौके पर आचार्य बालकृष्ण (महामंत्री-पतंजलि योगपीठ), संतोषकुमार गंगवार (राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार भारत सरकार), पूर्व केन्द्रीय मंत्री सतपाल महाराज, प्रभात जी (प्रभात प्रकाशन), पूर्व मंत्री शिवप्रताप शुक्ल, चन्द्रकुमार सोमानी (उद्योगपति) ने भी सम्बोधित किया।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम एवं संयोजक संजय चतुर्वेदी ने समारोह में आये अतिथियों को मिशन का प्रतीक चिन्ह एवं गंगा जली देकर सम्मानित किया। इस मौके पर ब्रह्मदेव शर्मा भाई जी, बिनोद गांधी (दिल्ली), संगीत सिंह सोम (विधायक), उमेश निगम (कानपुर), गिरीश चन्द्र सिन्हा (लखनऊ), संजय सिंह (इलाहाबाद), महेश चतुर्वेदी (इलाहाबाद), वीरेन्द्र सिंह (किसान संघ), रामनाथ कोविद (सांसद राज्य सभा), प्रदीप कौशिक, विजय पाल सिंह, ज्ञान सिंह नेगी, प्रेम चन्द्र अग्रवाल(विधायक), डॉ0 राजकुमार रावत, कुलदीप गुप्ता, जसवीर सिंह (मुरादाबाद), पी0एन0 पाठक, गोपाल कृष्ण फरलिया (दिल्ली), राकेश पहलवान (गोरखपुर), जुगलकिशोर तिवारी, पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल (सांसद), मोहन सिंह गांववासी, डॉ0 राममहेश मिश्र, आदेश चौहान (विधायक), डॉ. अनिल जैन, सुरेश चन्द्र जैन (विधायक), विजया बडथ्वाल (विधायक), अभयपाल सिंह (बस्ती) सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे। संचालन बृजेश रावत ने किया।

आयोजन

मैं चारण भारत माता का, माटी का सम्मान लिखूंगा

भारतीय नववर्ष 2072 के अवसर पर तीर्थनगरी हरिद्वार में प्रथम बार अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन स्थानीय शुभारम्भ बैंकट हॉल में भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित किया गया। कवि सम्मेलन का उद्घाटन श्याम जाजू (राष्ट्रीय मंत्री उत्तराखण्ड प्रभारी-भाजपा), आशीष गौतम (अध्यक्ष- दिव्य प्रेम सेवा मिशन), जे.सी. जैन (प्रमुख उद्योगपति), महेन्द्र पाण्डेय (सभी मोर्चो के प्रभारी) ने किया। उत्तरप्रदेश से आये आशुतोष वाजपेयी ने कविता पाठ करते हुए कहा 'मै तुममें दायित्वों का कुछ बोध जगाता हूँ सुन लो, मैं भारत की नारी की पीड़ा बतलाता हूँ सुन लो।' छत्तीसगढ़ से देवेन्द्र परिहार (वीर रस एवं हास्य रस) ने कहा कि ' मैं चारण भारत माता का, माटी का सम्मान लिखूंगा, इसके वंदन और अभिनन्दन, मस्तक का अभिमान लिखूंगा।।' द्वारा श्रोताओं में जोश भरा। उत्तर प्रदेश से पधारे सरदार रतन सिंह रतन ने कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'शहीदों ने मेरे देश को आजाद कर दिया, मेहनत कशों ने देश को आबाद कर दिया। बनकर के नेता देश की गद्दी पर जो चढ़े, इन ढोंगियों ने देश को बर्बाद कर दिया। दिल्ली से पधारी श्रृंगार रस की कवियत्री निहारिका शर्मा ने कहा 'हुआ क्या है आज निजाम को, कहीं अमन है न सुकून है। जो फजा में आग लगा सके, मुझे उस शरर की तलाश है। रूड़की से आये पंकज गर्ग ने कहा ' दरिया तो पानी खुद उन तक ले आया, कुछ तो प्यासों की भी जिम्मेदारी है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. अरविन्द नारायण ने कहा कि 'गीत हूँ या गजल मैं गुन-गुनाकर देखिए। आपकी ही भावना हूँ, सुन-सुनाकर देखिए। इस अवसर पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संजय चतुर्वेदी (संयोजक दिव्य प्रेम सेवा मिशन), भाजपा जिलाध्यक्ष कुलदीप गुप्ता, मेयर मनोज गर्ग, ने आये हुए कवियों का फलों एवं गंगाजली, रूद्राक्षमाला द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम में डॉ. महावीर अग्रवाल (कुलपति), वरिष्ठ भाजपा नेता राममूर्ति वीर, सुभाष चन्द (पार्षद), विमल कुमार (सांसद प्रतिनिधि), कन्हैया खेवड़िया (पार्षद), विनोद आर्य, कमला जोशी (जिलाध्यक्ष महिला मोर्चा), कुशल पाल सैनी (जिला महामंत्री), राजीव शर्मा (जिला महामंत्री) उज्जवल पण्डित, नरेश जायसवाल (सदस्यतता प्रभारी), कामिनी सडाना, संगीता गुप्ता, नरेश शर्मा (उपाध्यक्ष), ऋचा गौड, बिन्दिया गोस्वामी, राजकुमार अरोड़ा, रेणु शर्मा, अर्चना, आशीष झा, प्रशान्त खरे, डॉ. जितेन्द्र सिंह, बालकृष्ण शास्त्री, महेन्द्र प्रधान, मनोज ममगाई, अमित भट्ट, नवीन भट्ट, पवन, प्रदीप शर्मा, बृजभूषण विद्यार्थी, डॉ. निरंजन मिश्र विरेन्द्र तिवारी एडवोकेट, डा. प्रेम प्रकाश सतलेवाल, डा. विवेक, डा. प्रतीक, अनिरूद्ध भाटी, विजय शर्मा पार्षद, सहित नगर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मिशन के स्थापना दिवस पर विरेन्द्र एवं मनोहर को किया सम्मानित

राष्ट्रीय युवा दिवस स्वामी विवेकानन्द जयन्ती एवं दिव्य प्रेम सेवा मिशन के उन्नीसवें स्थापना दिवस के अवसर पर सेवा मिशन के अध्यक्ष माननीय आशीष भैया ने युवाओं को समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी एवं कहा कि निम्न वर्ग के लोगों को अपने खोए हुए व्यक्तित्व का विकास करने लिए शिक्षा देना ही उनकी एकमात्र सेवा करना है, भाव पूर्ण समर्पण से ही पूर्ण विकास सम्भव है। हमें प्रत्येक कर्म में अपने भाव का निरीक्षण करते रहना चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज में हम सबका सम्बन्ध सेवा का ही है अगर सेवा नि:स्वार्थ भाव से की जाय तो वह 'नर सेवा से नारायण सेवा' का रूप ले लेती है।

इस अवसर पर श्री आशीष भैया ने सेवा मिशन के दो युवा कार्यकर्ता श्री मनोहर कुमार एवं श्री विरेन्द्र बेलवाल को उनकी नि:स्वार्थ सेवा लिए सम्मानित किया। सेवा मिशन के कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी के बारे में अपने विचार प्रकट किए तथा उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन का विकास करने का व्रत लिया एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण भी किया।

ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा ट्रैक सूट वितरण

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित प्रदीप वाटिका छात्रावास में ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, प्रादेशिक कार्यालय देहरादून द्वारा सामाजिक दायित्व निर्वाहन (सी.एस.आर.) के अंतर्गत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

हरिद्वार मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती रंजना वर्मा द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स के द्वारा छात्रावास के 200 बच्चों को ट्रेक सूट एवं कुष्ठरोगियों की चिकित्सा हेतु दवाईयां वितरित की गई। बैंक के सभी सदस्यों की ओर से उपमहाप्रबन्धक श्री सुरेन्द्र कुमार ढल ने मुख्य विकास अधिकारी महोदया का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया एवं बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहनीय प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा महसूस हुआ। मैं सदैव इस संस्था से जुड़ी रहूँगी तथा सहयोग करती रहूँगी। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्री रजनीश कौशिक वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, अनूप यादव शाखा प्रबन्धक, प्रमोद कुमार वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, आर0के0 सक्सेना शाखा प्रबन्धक, जितेन्द्र वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, छात्रावास प्रमुख उमाशंकर सिंह, डॉ. जितेन्द्र सिंह, प्रशांत खरे सहित कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मिशन में आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित समिधा सेवार्थ चिकित्सालय,चण्डीघाट, हरिद्वार में मेट्रो अस्पताल द्वारा उत्तरांचल प्रदेश अग्रवाल महासभा के सौजन्य से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन अंजनी देवी ट्रस्ट के महन्त सतीश गिरि, प्रवीन अग्रवाल (जिलाध्यक्ष), राकेश अग्रवाल (महामन्त्री) ने संयुक्त रूप से किया। शिविर में जनरल फिजीशियन, स्त्री रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञों ने रोगियों का परीक्षण कर औषधि वितरण की। शिविर में बीपी, ब्लड शुगर एवं ईसीजी की सुविधा भी रोगियों को नि:शुल्क उपलब्ध करवायी गयी तथा अस्पताल की ओर से कैम्प कार्ड भी बनाये गये। समन्वयकर्ता राजीव शर्मा ने बताया कि कैम्प कार्ड साथ लाने पर रोगी को चिकित्सा शुल्क में छूट प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य शिविर में गिरीश अग्रवाल, डॉ. सुधीर अग्रवाल, हितेश अग्रवाल, मनोज सिंघल, शिवकुमार शर्मा, तपेश सिंह डॉ.जितेन्द्र सिंह, बालकृष्ण शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। इस मौके पर डॉ. सत्यनारायण शर्मा, राजेन्द्र नाथ गोस्वामी, गोपाल मंगल, शलभ सिंघल, तेजप्रकाश साहू, प्रिन्स अग्रवाल, विजेन्द्र पाण्येय, आनन्द रिछारिया आदि मौजूद थे।

जिनका सेवा ही चरित्र होता है वह व्यक्ति शिखर पर पहुँचते हैं

कुष्ठ रोगियों एवं उनके बच्चों को समर्पित संस्थान दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित विद्यालय माधवराव देवले शिक्षा मन्दिर, सेवाकुंज परिसर चण्डीघाट हरिद्वार में वार्षिक परिणाम घोषित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रो. विजयपाल शास्त्री (गुकांविवि), श्रीमती उमा भट्ट (सचिव-अधिकारी महिला क्लब), सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम व इन्जीनियर प्रदीप गर्ग ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

प्रधानाचार्य डॉ. जितेन्द्र सिंह ने परीक्षा परिणाम घोषित करते हुए बताया कि इस वर्ष 216 बच्चों ने परीक्षा दी और सभी छात्र उत्तीर्ण रहे। विद्यालय का वार्षिक परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों में सीनियर वर्ग की रश्मि कक्षा पंचम ने 97.33 प्रतिशत तथा जूनियर वर्ग में सिमरन कक्षा प्रथम ने 96.66 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विजयपाल शास्त्री ने कहा कि इस मिशन में आने पर तीर्थ में जाने जैसा लगता है। संस्था अपने दिव्य प्रेम के मिशन को प्राप्त करने को चरितार्थ कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रेम वह दिव्य होता है जो मोह और आसक्ति से रहित होता है। ऐसा प्रेम तीन जगह होता है माता अपने पुत्र से, गुरू अपने शिष्य से और भगवान अपने भक्तों से करते हैं। उन्होंने कहा कि आशीष जैसे स्वनाम धन्य पुरूष तीर्थ होते हैं। जिनका सेवा ही चरित्र होता है वह व्यक्ति शिखर पर पहुँचते हैं। मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम एवं संयोजक संजय चतुर्वेदी ने कार्यक्रम में आए अतिथियों को सेवा मिशन का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विद्यालय के नन्हें मुन्ने बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर नीरज कुमार (प्रसिद्ध व्यवसायी) रवीन्द्र सिंघल, सुनील अनेजा, यशवन्त सिंह, पंकज चौहान, डॉ. अलका राठौर, श्रीमती लीलावती गौतम, अश्विनी पाल सहित गणमान्य लोग मौजूद थे। विद्यालय के प्रबन्धक इ. प्रदीप गर्ग ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक कश्यप ने किया।

सोशल मीडिया पर गोष्ठी का आयोजन

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, चिन्तन प्रवाह, आदर्श समाज सारथी समिति के तत्वावधान में आयोजित सोशल मीडिया विषय पर भारत नीति संवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुरलीधर राव (राष्ट्रीय महासचिव-भाजपा) मुख्य वक्ता थे, मुख्य अतिथि शिव प्रकाश (राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री-भाजपा) एवं आशीष गौतम (अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन), आचार्य बालकृष्ण जी महाराज (महामंत्री-पतंजलि योगपीठ) ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर पार्थ सारथी स्कूल के बच्चों ने गंगा अवतरण कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुति दी। संचालन दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संयोजक संजय चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द जी महाराज, श्रीमती कमला जोशी, नगर निगम हरिद्वार के मेयर मनोज गर्ग, विमल कुमार, अविनाश ओहरी, कुलदीप गुप्ता (जिलाध्यक्ष भाजपा), अरूणा बंसल, कुसुम गांधी, संगीता, रीना तोमर, मयंक शर्मा, संदीप गोयल, गोमती मिश्रा, युद्धवीर सिंह, बालकृष्ण शास्त्री, डॉ. जितेन्द्र सिंह, सचिन शर्मा, प्रवीण शर्मा, प्रेम शंकर, अनिरूद्ध भाटी, प्रदीप शर्मा, विजय शर्मा, अशोक गुप्ता, राजीव शर्मा (महामंत्री भाजपा) सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मिशन के बच्चों को स्वेटर वितरण

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित माधवराव देवले शिक्षा मन्दिर, सेवाकुंज, चण्डीघाट, हरिद्वार में माता कृष्णामयी गिरि की ओर से विद्यालय में पढ़ने वाले दो सौ तीस बच्चों को स्वेटर वितरित किये गये। विगत 18 वर्षों से मिशन कुष्ठ-रोगियों, झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले एवं वन-गूजरों के बच्चों के लिए शिक्षा, चिकित्सा एवं संस्कार का पुनीत कार्य कर रहा है। माता कृष्णामयी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि वास्तव में मिशन के कार्यकर्ता जिस प्रकार से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, वह सराहनीय है तथा यहां गरीबों की सच्ची सेवा हो रही है।

इस अवसर पर प्रीति शर्मा, रंजना डबराल, अनीता जोशी एवं सुमित्रा बोहरा ने स्वयं अपने हाथों से बच्चों को स्वेटर पहनाए।

परिचय

हमारे कार्यकर्ता - यशवंत सिंह

दिव्य प्रेम सेवा मिशन ने अपनी स्थापना के 17 वर्ष पूरे कर लिए हैं। 12 जनवरी 1997 को हरिद्वार के चण्डीघाट क्षेत्र में एक झोपड़ी से शुरू हुआ कुष्ठ रोगियों की सेवा का यह संकल्प आज सैकड़ों बच्चों के जीवन में रोशनी के साथ-साथ समाज में सेवा और साधना का वाहक बन रहा है। मिशन के कार्यों से प्रभावति हो गाजीपुर उ.प्र. में 1 मई 1974 में स्व. सिद्धनाथ सिंह के यहाँ जन्मे यशवन्त सिंह जो कि प्रधानाचार्य कुंजबिहारी द्विवेदी से प्रेरणा पाकर ही सेवा कार्यों के लिए प्रभावित हुए थे तथा 27 फरवरी 2005 से मिशन में सेवाकार्य कर रहे हैं। यशवन्त सिंह का कहना है कि मिशन के संयोजक संजय चतुर्वेदी से मैं सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ और अपना सम्पूर्ण समय मिशन के कार्यों को समर्पित कर दिया है। मिशन में हो रहे सेवा कार्यों के लिए उनका मानना है कि समाज में जिन लोगों का बहिष्कार हो चुका है उन लोगों के जख्मों को मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा साफ कर मलहम-पट्टी की जाती है तथा उनके बच्चों को शिक्षित कर समाज में उन्हें सिर उठा कर जीने की प्रेरणा दी जाती है। उन्हें मिशन का वातावरण शुरूआत से ही बहुत पसन्द आया। अपने जीवन को सेवा कार्यों में समर्पित करने वाले यशवन्त जी जे. के. ड्रग्स, गजरौला उ.प्र. में प्रोडक्शन कैमिस्ट, चिल्ड्रन्स एकेडमी इण्टर कालेज, रूडकी, श्री सत्य साँई स्कूल, ऋषिकेश में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वर्ष 2009 से मिशन की दिल्ली इकाई के सम्पर्क प्रमुख हैं और कार्यक्रमों के माध्यम से मिशन के लिए संसाधन जुटा रहे हैं। श्री यशवन्त जी चाहते हैं कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन दिन-प्रतिदिन आगे बढ़े और अधिक से अधिक लोग इस मिशन से जुड़ें समाज में सेवा करें और समाज में फैले कोढ़ के कलंक को मिटा सकें। इन सेवा कार्यों के प्रेरणा स्त्रोत आशीष गौतम जी के लिए उनका मानना है कि हमारे समाज में ऐसी दिव्य आत्माएं बहुत कम हैं जो समाज के बहिष्कृत लोगों को समाज में हक दिलाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देते हैं। आशीष भईया से हम सभी को क्या अपितु सम्पूर्ण समाज को प्रेरणा लेकर सेवा कार्यों के लिए अग्रसर होना चाहिए।

श्री मनोहर परिकर जी-रक्षा मंत्री भारत सरकार
का अभिनन्दन करते हुए
सेवा मिशन के संयोजक-श्री संजय चतुर्वेदी जी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित
दिव्य भारत शिक्षा मन्दिर के छात्र
सलमान खान को राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में
प्रथम स्थान प्राप्त करने पर
सम्मानित करते हुए उत्तराखण्ड प्रदेश के तत्कालीन
महामहिम राज्यपाल अजीज कुरैशी जी

साक्षात्कार

पायलट बनना चाहता हूँ

श्री आशीष भैया जी द्वारा पोषित संस्था ''दिव्य प्रेम सेवा मिशन'' जो सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े एवं कुष्ठ रोगियों के बच्चों के न केवल वर्तमान अपितु भविष्य को भी बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है, जहाँ बच्चे शिक्षा व स्वास्थ्य के साथ अच्छे संस्कार भी पाते हैं। 12 जनवरी 1997 को हरिद्वार के चण्डीघाट क्षेत्र में एक झोपड़ी से शुरू हुआ कुष्ठ रोगियों की सेवा का यह संकल्प आज सैकड़ों बच्चों के जीवन में रोशनी के साथ-साथ समाज में सेवा और साधना का वाहक बन रहा है। मिशन द्वारा संचालित प्रदीप वाटिका छात्रावास की सेवा भूमि में रह रहा अयोध्या उ.प्र. का एक छात्र चन्द्रिका मण्डल बताता है कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसके पिताजी ने दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित छात्रावास प्रदीप वाटिका में प्रवेश करवाया था। चन्द्रिका आज आठवीं कक्षा का छात्र है। चन्द्रिका पायलट बनना चाहता है। मिशन एवं देश की सेवा करना ही उसका ध्येय है।

चन्द्रिका कहता है कि प्रदीप वाटिका का वातावरण शुरूआत से ही बहुत पसन्द आया। मैं प्रत्येक विषय में कडी मेहनत कर रहा हूँ इसके साथ ही व्यायाम व खेल में रूचि है। हमारे जैसे बच्चों को यहाँ अपने सपनों को पूरा करने का मौका मिला है। सेवा कार्यों के प्रेरणा स्रोत आशीष गौतम जी ने संस्था द्वारा हमारे जैसे हजारों छात्रों को सहारा दिया है। आशीष जी के समान हमारे समाज में ऐसी दिव्य आत्माएं बहुत कम हैं जो समाज के बहिष्कृत लोगों को समाज में हक दिलाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देती हैं।

साक्षात्कार

एक कदम सफलता की ओर....

कहते हैं अगर इंसान के अंदर कुछ करने का जज्बा हो तो वो किसी भी परिस्थिति से लड़कर सफलता हासिल कर सकता है। बस जरूरत होती है उसे पहचान के उड़ान में मद्द करने वाले दो हाथों की। ऐसी ही कुछ कहानी है 35 वर्षीय विष्णु कुमार की। विष्णु, झारखण्ड (धनबाद) का रहने वाला एक युवा, जिसे इस समाज के सबसे तिरस्कृत रोग ने अपना घर छोड़कर हरिद्वार आने पर बाध्य कर दिया। कुष्ठ रोग होने के पश्चात समाज की अवेहलनाओं से बचने के लिए भविष्य की चिंता के साथ 20 वर्षीय विष्णु हरिद्वार पहुँचा। चण्डीघाट पर उसने अपना आश्रय बनाया और फिर शुरू हुई जिन्दगी से उसकी जंग, यही वक्त था जब आशीष गौतम (भैया जी) ने इन कुष्ठ रोगियों के बीच आकर कार्य करना शुरू किया था। हरिद्वार आने के बाद चण्डीघाट स्थित सेवाकुंज आश्रम में विष्णु की मुलाकात आशीष गौतम से हुई। भैय्या जी से विष्णु की मुलाकात उसके सुखद भविष्य के लिये ही थी। कच्ची उम्र में कुष्ठरोग के कारण भीख मांगने वाले विष्णु के पास अब आशीष भैय्या का मार्गदर्शन था। विष्णु के रोग का इलाज दिव्य प्रेम सेवा मिशन में शुरू हुआ और साथ ही उसके लिये रोजगार के लिये स्वास्थ्य सेवा में उसका प्रशिक्षण। कई वर्षो के इलाज के दौरान ही विष्णु का झुकाव सेवा कार्य की तरफ हुआ और अपने जीवन को नई दिशा देने के लिये विष्णु ने दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित समिधा सेवार्थ चिकित्सालय में मरहम-पट्टी का कार्य शुरू किया। विष्णु अपने जीवन को एक नई पहचान देना चाहता था और इसके लिये आर्थिक रूप से उसका स्थायित्व बहुत जरूरी था। लगातार अस्पताल में कार्य करते हुये विष्णु ने रूपये जमा किये और बैटरी चालित रिक्शा लिया। आज भी विष्णु की आँखों ने सपने देखना नहीं छोड़ा है। दिन भर बैटरी चालित रिक्शा चलाकर और शाम के वक्त अस्पताल में कुष्ठ रोगियों की मरहम पट्टी करने वाला विष्णु और आगे बढ़ना चाहता है। आज उससे प्रेरणा लेकर कुष्ठ आश्रम में कई और नौजवानों ने भीख मांगना छोड़कर मेहनत से जीवन यापन शुरू कर दिया है। विष्णु उन सभी लोगों के लिए एक मिसाल है जो अनुकूल परिस्थतियों और संसाधनों के होते हुए भी मेहनत से कतराते हैं। विष्णु हर एक नौजावन के लिए प्रेरणा है, जो जीवन में कुछ करना चाहते हैं। दिव्य प्रेम सेवा मिशन हर एक स्वप्न देखने व उनको पूरा करने वालों के लिए आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक स्तम्भ बन कर खड़ा है।

संरक्षण

हमारे सहयोगी अक्टूबर, नवम्बर दिसम्बर 2014

आजीवन संरक्षक सदस्य

श्री आई0 पी0 सिंह, लखनऊ
श्री विशुन सिंह, झाँसी
श्री विनोद कुमार सोनी, झाँसी
श्री गोपाल कृष्ण फरलिया, नई दिल्ली
मै. बत्रा हॉस्पिटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सेन्टर, नई दिल्ली
श्री आद्य-कात्यायनी शक्तिपीठ मन्दिर, नई दिल्ली

सेवा मंडल सदस्य

श्री पवन सरावगी, झांसी
श्री पुरूषोत्तम अग्रवाल, झाँसी
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, झाँसी
श्री जे0 के0 सिंह, झाँसी
श्री विरेन्द्र राय , झाँसी
कु0 पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, महोबा
श्री विवेक विक्रम सिंह, रायबरेली
श्रीमती राधा विश्वनाथ, देहरादून
श्री गौरव देवरा, बैंग्लोर

मांगलिक अक्षय निधि

मांगलिक अक्षयनिधि
श्री गोविन्द प्रसाद गुप्ता, दुर्ग
श्रीमती आशारानी सेठ, दिल्ली
श्री पंकज गुप्ता, झाँसी
श्री के0 के0 गुप्ता, झाँसी
श्री प्रमोद सेठ (जौरी वाले), झाँसी
श्री प्रमोद दीक्षित, झाँसी
श्री आजाद शर्मा, झाँसी
डॉ0 अजय गुप्ता, झाँसी
वीणा तिवारी, झाँसी
श्री सुरेश कुमार प्रेमचन्दावानी, झाँसी
डॉ0 एस0 एन0 उपाध्याय, झाँसी
डॉ0 रवि प्रकाश, झाँसी
श्री रघुवीर प्रसाद शाहू, हाथियाताल
श्री आनन्द कुमार गुप्ता, झाँसी
श्री विनोद कुमार गुप्ता, झाँसी
श्री विपुल, झाँसी
श्री रजनी रमेश सिंह, मुम्बई
श्री सुनील शर्मा , दिल्ली
श्री शेर सिंह कटारिया, दिल्ली
श्री महेन्द्र खन्ना, नई दिल्ली
श्री हुकुम चन्द्र कारवाल, सहारनपुर
श्री अमृत लाल बुद्धिराज, दिल्ली
श्रीमती कुसुम शर्मा, दिल्ली
श्री अखिलेश चन्द्र, हरिद्वार
श्री राम चमेली, दिल्ली
श्रीमती सरोज कुमार, दिल्ली
श्री कैलाश सिंह, इलाहाबाद
श्री ओ0 पी0 राय, लखनऊ
श्री सीताराम डंग, दिल्ली
सुश्री कमल कुमारी कपूर, दिल्ली
सुश्री नीलम गाँधी, दिल्ली
श्री आशीष कुमार खरे, इलाहाबाद
डॉ0 जगदीश सिंह चौहान, झाँसी
श्री श्याम पुत्र श्री धनाराम सिंह, झाँसी
श्री गोपाल खैरा, झाँसी
श्री अखिलेश गुप्ता, झाँसी
श्री एम0 पी0 सिंह, झाँसी
श्री दीपक कठिल, झाँसी
श्री विवेक कुमार अग्रवाल, नोएडा
डॉ0 अनिल त्यागी, नोएडा
श्री हरिओम सिंह जादौन, झाँसी
श्री अरूण कुमार अग्रवाल, झाँसी
सरिता लाल , मुरादाबाद
श्री नीरथ अग्रवाल, दिल्ली
श्री राधारमन हरिबोल(ग्रुप), दिल्ली
श्री अमित गुप्ता, गाजियाबाद
सुश्री मंजू शर्मा, गुड़गांव
श्री गोपाल अग्रवाल, मुरादाबाद
वार्षिक शुभचिन्तक सदस्य
श्री जितेन्द्र प्रजापति, झाँसी
पं0 रवि शर्मा (विधायक), झाँसी
श्री अनिल द्विवेदी, झाँसी
श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, झाँसी
श्री पुखराज जैन, झाँसी
श्री महेश कुमार पमनानी, झाँसी
श्री सुशील कुमार गुप्ता, झाँसी
श्री देवेन्द्र गुप्ता, झाँसी
श्री महावीर सिंह जादौन, झाँसी
श्री देशरतन चौधरी, इलाहाबाद
श्री योगेन्द्र सिंह सेंगर, ग्वालियर
श्री अशोक तनेजा, कानपुर
श्री महेश चन्द्र राना, दिल्ली
श्री संजय राय, झाँसी
श्री पवन गौतम, झाँसी
सुश्री नेहा सिंह, सुल्तानपुर
श्री सत्य प्रकाश शर्मा, गुड़गांव
सुश्री अनु गुप्ता, दिल्ली
श्री प्रताप सिंह मलिक, हरियाणा
श्री मदन मोहन कपूर, दिल्ली
श्री विश्वनाथ कपूर, दिल्ली
श्री बी0 के0 अग्रवाल, दिल्ली
वार्षिक संरक्षक (जनवरी-मार्च 2015)
श्री उमाशंकर यादव, कानपुर
श्री सैलेश राज, हैदराबाद
श्री विशाल गुप्ता, टीकमगढ़
श्री अरूण कुमार अग्रवाल, झाँसी
पं0 गोपाल दुबे, ग्वालियर
श्रीमती सुषमा सब्बरवाल, दिल्ली
श्री विजय राज सिंह, गाजियाबाद
श्री अरविन्द गर्ग, मुरादनगर
श्री राजेन्द्र गोयल, मुरादनगर
श्री कृष्ण लाल कोहली, दिल्ली
श्री मनीष तिवारी, झाँसी
श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता, नोएडा
श्री नवीन, गाजियाबाद
श्री दीपक वार्ष्णेय, हाथरस
श्रीमती शकुन्तला गुप्ता, इलाहाबाद
श्री सुरेश चन्द्र द्विवेदी, इलाहाबाद
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, अहमदाबाद
सुश्री विमला शर्मा, दिल्ली
श्री प्रवीण पुरी, कानपुर
सुश्री अपर्णा अग्रवाल, दिल्ली
श्री अरूण कुमार चौहान, इलाहाबाद
श्री सुनील सिंह बिष्ट, हरिद्वार
श्री सुनील कुमार वर्मा , हरिद्वार
श्री तेजेन्दर सिंह सन्धु , हरिद्वार
श्री मुकुट मेहता, दिल्ली
श्री शिवशंकर शिवहरे, हरियाणा
श्री तुषार जे0 अंजारिया, मुरादनगर
श्री सरत चन्द्र पाण्डा, उड़ीसा
श्रीमती मीरा हेमराजानी, दिल्ली

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम समाचार पत्रों में

संगम नगरी में शेखर सेन सिखाएंगे संस्कार

क्या है दिव्य प्रेम सेवा मिशन

माता-पिता के चरणों में निवास करती है भक्ति

विश्वपटल पर नया कीर्तिमान रचेगा भारत : जोशी

ज्ञान, भक्ति और कर्म से मिलते हैं भगवान

ईश्वर प्राप्ति के मार्ग हैं ज्ञान, कर्म व भक्ति

एकता का आधार मंगलमय परिवार : योगी

एकल मंचन से फिर-फिर जीवंत हुए तुलसी

शेखर ने कही 'तुलसी' कथा रघुनाथ की

शिक्षा व संस्कार का अलख जगा रहा दिव्य मिशन : आशीष

योग के अच्छ दिन आए : बाबा राम

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में बोले योगगुरु

एमडीएच के मालिक जैसा बनने के लिए छह मंत्र

मानव सेवा ईश्वर सेवा से बड़ी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन का एक दिवसीय वार्षिक सम्मेलन संपन्न

कुंभ से पूर्व 11 हजार पेड़ लगाये जाने का लिया संकल्प

कुंभ आस्था का प्रतीक पुस्तक का विमोचन

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)

S.No.: Date :.....

आप भी सहयोगी हो सकते हैं!

- ✦ 2,51000 रु. एक कक्ष का निर्माण ✦ 1,25000 रु. आजीवन संरक्षक
- ✦ 51,000 रु. सेवा मण्डल सदस्य के रूप में ✦ 21,000 रु. वार्षिक एक बालिका का संरक्षकत्व
- ✦ 18,000 रु. वार्षिक एक बालक का संरक्षकत्व ✦ 5100 रु. देकर सामान्य सदस्य के रूप में
- ✦ केन्द्रीय संचालन समिति के सदस्य के रूप में अपने परिचितों से मिशन के सेवा कार्य हेतु कम से कम 1 लाख रुपये का सहयोग कराकर

मांगलिक अक्षय निधि (अन्न क्षेत्र)

अक्षय निधि (यह राशि जीवन में एक ही बार देनी होगी) सहयोगियों को उनके द्वारा बताये गये किसी भी स्मरणीय दिवस (जन्मदिन/वर्षगांठ/पुण्यतिथि आदि) पर सेवा मिशन द्वारा प्रतिवर्ष आभार ज्ञापित किया जायेगा।
✦ 31,000 रुपए पूर्ण दिवस आहार ✦ 11,000 रुपए भोजन दोपहर या रात्रि ✦ 5100 रुपए अल्पाहार प्रातः काल या सांयकाल

नाम.....

पता.....

.....

.....

फोन : .....मोबाइल :.....

ई–मेल.....

जन्मतिथि.....विवाह तिथि.....

विशेष दिवस.....

हस्ताक्षर

बैंक विवरण
(भारत हेतु)
दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)
खाता धारक का नाम : दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास
खाता संख्या : 023901000105
RTGS Code : ICIC 0000 239
आई.सी.आई.सी.आई., ब्रांच हरिद्वार, उत्तराखण्ड

Bank's Details
(Only for other countries)
Divya Prem Sewa Mission Niyas (Reg.)
Bank's Details
A/c Name : Divya Prem Sewa Mission Niyas
A/c Number : 09431170000015
Branch Code : 0943 Under
RTGS Code : RTGS/NEFT HDFC 0000943
Bank Name : HDFC, Near Vishal Megha Mart, Ranipur More, Haridwar, India

सेवा मिशन को दी जाने वाली राशि आयकर अधिनियम 80G के अधीन करमुक्त है। मनीआर्डर, चैक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट **''दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास'' (Divya Prem Sewa Mission Nyas)** के नाम पर ही भेजें। सेवा मिशन विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम (FCRA) में रजिस्टर्ड है।

पत्र व्यवहार का पता :
दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुञ्ज, चण्डीघाट, पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत
दूरभाष : (01334) 222211, 09837088910, 09219692776
ई–मेल : divyaprem03@gmail.com; divya_prem03@hotmail.com
वैबसाइट : www.divyaprem.co.in

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के वार्षिक सम्मेलन में आयोजित कार्यक्रमों की झलक

R.N.I. No. U.T.T.H.I.N./2005/14897

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संयोजक
श्री संजय चतुर्वेदी जी द्वारा

निर्मल गंगा-स्वच्छ भारत

अभियान का शुभारम्भ
एवं
संकल्प लेकर अभियान में
सहयोग करते हुए स्वयं सेवक

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक संजय चतुर्वेदी द्वारा दि हिन्दुस्तान ऑफसैट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार से मुद्रित तथा दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट, पो.-कनखल, हरिद्वार-249408 (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित